



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-05

कल्पादि सम्बत् 1972949117

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 26 अप्रैल से 02 मई 2017 तक

वैशाख कृष्ण अमावस्या से वैशाख शुक्ल सप्तमी सम्बत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

**आतंकवाद
के जख्म....**

पृष्ठ- 3

**पपीते के
पत्ते का...**

पृष्ठ- 4

**कुरीतियाँ
बढ़ रही..**

पृष्ठ- 5

**इतिहास
पुनर्लेखन...**

पृष्ठ- 8

**सरकार के
लिये है....**

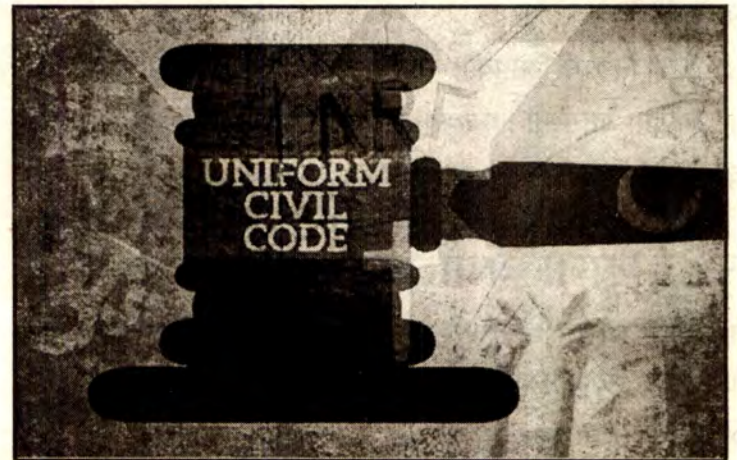
पृष्ठ- 12

- यह समस्या का हल नहीं
- अमेरिकी कांग्रेस के रिपब्लिकन सिनेटरों द्वारा बलूचिस्तान को पाक से स्वतंत्र कराने की मांग का प्रस्ताव!
- आखिर कब बदलेगा देश
- अब गूँजेगा राष्ट्रगान
- मणिपुर में शुरु की भाजपा ने पहली पारी
- धर्माधारित आतंकवाद एक सच्चाई

मुस्लिम लॉ बोर्ड सभी मुस्लिम समस्याओं का निर्माता देश में एक समान नागरिक कानून बने-हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड की घोषणा में केवल पुरानी बातों को ही दोहराया गया है। उसने तीन तलाक को नाजायज ठहराने की बजाए, केवल बे-वजह तलाक लिया जाता है, तो समाज उसका बहिष्कार करेगा, यह कहा है। वह नाजायज है कि नहीं, यह तय करने का अधिकार भी उन्हीं मुस्लिम-मौलवियों का होगा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि मध्य युगीन परम्पराओं में जीने वाले ये वही लोग हैं जो आज भी उस युग की बर्बर परम्पराओं को ही अपना धर्म तथा महिलाओं को भोग की वस्तु समझते हैं। अपनी आधी आबादी को ये सामान्य **शेष पृष्ठ 11 पर**



**वैश्विक परमाणु दिग्गजों का पतन भारत के लिए सुनहरा अवसर!
भारत बने परमाणु संपन्न राष्ट्र-हिन्दू महासभा**

● संवाददाता ●



वैश्विक नियमों के तहत भारत को आयातित यूरेनियम ईंधन मिलना तय हो चुका है, ऐसे में दिग्गज परमाणु कंपनियों के पतन ने समीकरण को भारत के पक्ष में ला दिया है। वैश्विक परमाणु उद्योग में एक तरह का मेल्टडाउन हो रहा है और यह मेल्टडाउन अटलांटिक महासागर के दोनों ओर हो रहा है। यह एक ऐसे समय पर हो रहा है, जब भारत परमाणु ऊर्जा में भारी निवेश कर रहा है। दिग्गज परमाणु कंपनियों के इस पतन में भारत के लिए एक नया अवसर है और भारतीय परमाणु प्रतिष्ठान में कई लोग इन कंपनियों के समय पूर्व पतन का जश्न मना रहे हैं। ये कंपनियां भारत में कम से कम 950 अरब डॉलर की लागत वाले दसियों परमाणु संयंत्र लगाने की कोशिश कर रही थीं। इस परिदृश्य को बयां करते हुए एक शीर्ष सरकारी अधिकारी ने कहा, यह परमाणु मेल्टडाउन एक तरह का आशीर्वाद है। इन बदली हुई परिस्थितियों में यदि भारत का निजी उद्योग सही ढंग से अपने पत्ते खेलता है तो वह देश को परमाणु प्रौद्योगिकी के कम खर्च वाले आपूर्तिकर्ताओं का केंद्र बनने का अवसर भी दे सकता है। अभी तक भारत के गले में जो बेहद महंगे फ्रांसीसी और अमेरिकी परमाणु रिएक्टर खरीदने का राजनयिक फंदा कसा हुआ था, वह निकला नहीं है लेकिन उसकी पकड़ तो ढीली हो ही गई है। भारत को परमाणु वाणिज्य क्लब में वापस लेने से जुड़ी दीर्घकालिक वैश्विक वाताओं के तहत एक तरह का विनिमय सौदा हुआ था। इसके तहत भारत फ्रांसीसी और अमेरिकी रिएक्टर खरीदने को राजी हो गया था लेकिन अब कम से कम दो दिग्गज विदेशी कंपनियों के व्यवसायिक संचालन परत हो रहे हैं, ऐसे में भारत को अपनी व्यवसायिक प्रतिबद्धताओं से पीछे हटने की जरूरत नहीं है। भारत फ्रांसीसी और **शेष पृष्ठ 11 पर**

हिन्दू नव वर्ष कब प्रारम्भ होता है?

१. शक सम्वत् प्रति वर्ष २२ मार्च से प्रारम्भ होता है। २२ मार्च से नव शक सम्वत् १६३६ प्रारम्भ हुआ। इस दिन चैत्र मास की प्रथम तिथि थी। इसमें कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष नहीं होते हैं। इसे राष्ट्रीय शक सम्वत् भी कहा जाता है। ब्रिटिश सरकार ने इसी सम्वत् को मान्यता दी थी। यह मान्यता अभी तक जारी है। इसे शाके सम्वत् भी कहते हैं।

२. अधिकांश हिन्दू संगठन विक्रमी सम्वत् को पसन्द करते हैं। इसमें कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष होते हैं। १३ मार्च को चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि थी। उस दिन विक्रमी सम्वत् २०७४ प्रारम्भ हुआ था। महाराष्ट्र अकेला ऐसा राज्य है जहाँ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि को नववर्ष प्रारम्भ होने की खुशी मनाई जाती है। हम महाराष्ट्र की इस सोच से सहमत हैं क्योंकि यह उचित लगता है।

३. देश के अन्य राज्यों में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को नव वर्ष प्रारम्भ होने की खुशी मनाई जाती है जिसे वर्ष प्रतिपदा भी कहते हैं। इस वर्ष २८ मार्च को प्रतिपदा थी।

श्री राम चन्द्र जी की जन्म तिथि कौन सी है? (६७७११७)

१. महाराजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र राम चन्द्र थे।
२. आपका जन्म त्रेता युग में हुआ था। अयोध्या आपकी जन्म भूमि है।
३. पूरे हिन्दू समाज में आपकी मान्यता है। ५ अप्रैल को आपका जन्म दिन था।
४. सनातन धर्मी आपको, सातवा, विष्णु का अवतार मानते हैं।
५. आपका जन्म नौ लाख सत्तर हजार एक सौ सत्रह वर्ष पहले हुआ था।

वीर सावरकर ने गुरु गोलवलकर से बोलना क्यों बंद कर दिया था?

१. स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर का जन्म २८ मार्च १८८३ को भगूर (नासिक) में हुआ था।
२. आप २० वीं शताब्दी के सबसे बड़े हिन्दू संगठक थे।
३. आपने ही १-१-१९३८ को हिन्दू महासभा को राजनीतिक दल घोषित किया था।
४. आपने हिन्दुत्व नाम से पुस्तक लिखी थी जिसे पढ़कर डा० हेडगेवार कांग्रेस छोड़कर हिन्दूवादी बने थे।
५. डा० हेडगेवार ने १९२५ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की थी ताकि हिन्दू संगठित और बलशाली बनें। वे वीर सावरकर को झुककर प्रणाम करते थे।
६. १९४० में उनकी मृत्यु के बाद गुरु गोलवलकर संघ के सर संघ चालक बने।
७. उन्होंने बचावकारी स्वयं सेवक तैयार किया जबकि डा० हेडगेवार आक्रामक सोच के स्वयं सेवक बनाना चाहते थे। गुरु जी ने १९४५-४६ के चुनावों में हिन्दू महासभा को वोट नहीं दिलवाई और १९५१ में भारतीय जनसंघ की स्थापना करा दी जिसका १९८० से नाम भाजपा है।
८. इससे अप्रसन्न होकर वीर सावरकर ने गुरु गोलवलकर से बोलना बन्द कर दिया था क्योंकि सावरकर जी को गुरु जी के कार्य पसन्द नहीं आते थे। आई०डी०गुलाटी, बुलन्दशहर

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह खासकर घर के व्यवहारिक पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। ऑफिस में वैकल्पिक व्यवस्था बनाये रखने की आवश्यकता है। कार्यों में सफलता की वजह से मन प्रसन्न रहेगा। कुछ लोगों का खोया हुआ अधिकार पुनः मिल जाने की सम्भावना है।

वृष - इस सप्ताह आपके प्रयास खाली नहीं जायेंगे। कई तरह के रुके हुये कार्य सम्पन्न होंगे। विरोधी आपके सामने समझौते का प्रस्ताव रखेंगे, जिस पर अमल करना हितकर रहेगा। आर्थिक लेन-देन से बचने की आवश्यकता है। परिवार में अहं के कारण टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मिथुन - जिम्मेदारियों का भार बढ़ेगा ऐसी स्थिति में स्वविवेक से निर्णय लेने होंगे। दहलीज पर आते-२ सफलता रह जायेगी। ऑफिस के कार्यों में स्वयं को बाध्य महसूस करेंगे। न्यायिक मामलों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। पड़ोसियों के गिले-शिकवे दूर होंगे।

कर्क - इस सप्ताह आप लक्ष्य को भेदने के लिए अधीर रहेंगे। विरोधियों का मन आपकी ओर से हटेगा। अपने कार्यों को करने के लिए सतत संघर्ष करना पड़ेगा।

सिंह - इस सप्ताह आप-अपने ही कार्य से सन्तुष्ट नहीं होंगे। अपना आत्म विश्लेषण करते रहने से मन में आशावादी विचार आयेंगे। सही वार्तालाप एवं व्यवहार में सन्तुलन के कारण आपकी प्रशंसा होगी। अति भावुकता की वजह से ठगे जा सकते हैं।

कन्या - इस सप्ताह कुछ नये ढंग से कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। त्रुटियों निराशा की ओर ले जायेंगी किन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है। हर रात्रि के बाद एक बेहतर सुबह भी आती है। अधूरे कामों की पुनः समीक्षा करने की जरूरत नजर आ रही है।

तुला - इस सप्ताह आप आलोचना को नजरअंदाज करेंगे तो आप विपरीति परिस्थितियों में भी मजबूत होकर निकलेंगे। अपने कार्यों को करने में अति जल्दबाजी हानि पहुंचा सकती है। आपके इर्द-गिर्द लोग चक्कर लगायेंगे क्योंकि आप उपयोगी नजर आ रहे हैं।

वृश्चिक - इस सप्ताह बाधाकारी चीजों से मुक्ति मिलेगी। परम्पराओं के विरुद्ध जाने का मतलब है कि आप-अपनों से दूर हो जायेंगे। ईमानदारी व निष्पक्ष तरीके से काम करने का हौसला बना रहेगा जिससे मानसिक उर्जा में वृद्धि होगी।

धनु - इस सप्ताह आप-अपने कार्यों को सफलतापूर्वक करेंगे तथा दूसरों की सहायता करने में पीछे नहीं हटेंगे। गुप्त शत्रुओं से सतर्क व सावधान रहने की आवश्यकता है। नये मित्र बनेंगे किन्तु सुरक्षा के दृष्टि से स्वयं को आत्म-विश्वास से लबरेज रखना होगा।

मकर - इस सप्ताह समस्याओं का त्वरित निदान ढूँढने के चक्कर में आप उलझे रह सकते हैं। आवश्यकता से अधिक काम करने से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। कार्य में बिलम्ब होने से मन उदास रहेगा। दूसरों के कार्यों को करने में असहज महसूस करेंगे।

कुम्भ - नयी योजनाओं का शुभारम्भ एक दीर्घकालीन निवेश है, जिसके दूरगामी परिणाम सार्थक सिद्ध होंगे। मानसिक संवेग से अस्थिरता बढ़ेगी। ऑफिस की गतिविधियों में आपकी सक्रिय भूमिका से लोग डरे व सहमें नजर आयेंगे।

मीन - इस सप्ताह आप भावावेश में आकर कामें करेंगे तो ठगे जा सकते हैं। रुढ़िवादिता के शिकार हो सकते हैं। नियमों की अनदेखी आपको मुसीबत में डाल सकती है। पूर्व की कटुता मन पर हावी रहेगी। तमाम बाधाओं के बाद लक्ष्य प्राप्त होंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना॥

मैं वेदों में सामवेद हूँ, देवों में इन्द्र हूँ, इन्द्रियों में मन हूँ और भूत-प्राणियों की चेतना अर्थात् जीवनशक्ति हूँ॥२२॥

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वितेशो यक्षरक्षसाम्।

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्॥

मैं एकादश रुद्रों में शङ्कर हूँ और यक्ष तथा राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूँ। मैं आठ वसुओं में अग्नि हूँ और शिखर वाले पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूँ॥२३॥

पुरोधसां च मुख्यां मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।

सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः॥

पुरोहितों में मुखिया बृहस्पति मुझ को जान। हे पार्थ! मैं सेनापतियों में स्कन्द और जलाशयों में समुद्र हूँ॥२४॥

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्येकमक्षरम्।

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः॥

मैं महर्षियों में भृगु और शब्दों में एक अक्षर अर्थात् ओडकार हूँ। सब प्रकार के यज्ञों में जपयज्ञ और स्थिर रहने वालों में हिमालय पहाड़ हूँ॥२५॥

अध्यक्षीय

आतंकवाद के जख्म

६ अप्रैल के दिन विश्व एक बार फिर बेगुनाहों की हत्या का साक्षी बना। मिस्र में ईस्टर के पूर्व पड़ने वाले रविवार यानी पाम संडे को दो अलग-अलग शहरों में बम धमाके हुए, जिसमें करीब ५० लोगों की मौत हो गई है और सौ से अधिक घायल हैं। उधर सोमालिया में मोगादिशू में रक्षा मंत्रालय के पास हुए एक धमाके में १३ लोगों की मौत व कई के घायल होने की खबर है। मिस्र के हमले की जिम्मेदारी आईएस ने ली है, वहीं सोमालिया में यह काम अल कायदा के सहयोगी संगठन अल शबाब का है। आतंकवादी अपने शिकार को धर्म के चश्मे से देखते हैं। आतंकवाद की निंदा करने वालों में भी बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जो यह देखते हैं कि निशाने पर किस धर्म के लोग थे। सच तो यह है कि जब कोई बम फटता है और खून के छींटे, मांस के चिथड़े चारों ओर बिखरते हैं, तो यह किसी हिंदू, मुस्लिम या ईसाई की नहीं, मानवता की हत्या होती है। मिस्र और सोमालिया में भी एक बार फिर इसी मानवता का बड़े पैमाने पर कत्ल हुआ है। मिस्र में अल्पसंख्यक ईसाई लंबे समय से आईएस की हिट लिस्ट में रहे हैं। इससे पहले भी वहां चर्च पर आईएस ने हमला किया है और बड़ी निर्लज्जता से इसकी जिम्मेदारी भी ली है। पाम संडे ईसाई कैलेंडर के खास दिनों में से एक है। ईसाइयों पर हमले के लिए इस खास दिन और चर्च को चुनकर आईएस ने अपनी



राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

धर्मांधता जाहिर अब भी इस वह इस्लाम का पैरोकार है। मान रहा है कि पर हमला किया है क्योंकि तांता

और अलेक्जेंड्रिया इन दोनों शहरों के चर्चों में प्रार्थना के लिए आए ईसाइयों की रक्षा करते हुए कई मुस्लिम सुरक्षाकर्मियों ने भी जान गंवाई है। इस हमले के बाद मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतेह अल-सीसी ने राष्ट्रीय रक्षा परिषद की बैठक बुलाई। विगत पांच महीनों में इस तरह की बैठक दूसरी बार हुई है, जिसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री और सैन्यप्रमुख शामिल हुए। बैठक के बाद राष्ट्रपति सीसी ने देश में तीन महीने के आपातकाल का ऐलान किया है। यह निर्णय भी लिया गया है कि आतंकवाद से लड़ने के लिए उच्च परिषद की स्थापना की जाएगी। मुमकिन है ऐसी किसी परिषद के गठन से आतंकवाद से निपटने में थोड़ी बहुत सहायता मिले, लेकिन उसके खाते के लिए कई और प्रयास करने होंगे। मिस्र के ताजा हमलों में सुरक्षा में चूक भी एक बड़ा कारण है। तांता के जिस चर्च में बम धमाका हुआ, उसी में पिछले हफ्ते ही एक बम बरामद किया गया था। यानी आतंकी लगातार इस फिराक में थे कि वे कब हमले को अंजाम दे पाते हैं। लेकिन सुरक्षा में चूक के ऐसे उदाहरण शायद पिछले दिनों लंदन, सेंट पीटर्सबर्ग या स्टॉकहोम में देखने मिले हैं। दरअसल बात यह है कि तमाम सुरक्षा प्रबंधों के बावजूद खुद की जान देने और दूसरों की लेने को आतुर आतंकियों को रोकना कड़ी चुनौती है। मिस्र ने आतंकवाद से निपटने के लिए जिस तरह उच्च परिषद के गठन का फैसला लिया है, वैसे ही सोमालिया के राष्ट्रपति मोहम्मद अब्दुल्लाही मोहम्मद ने अपने देश में अल शबाब को कमजोर करने के लिए नयी रणनीति बनाई। इसके तहत उन्होंने देश को युद्ध स्थल घोषित करते हुए सेना और खुफिया विभागों के प्रमुखों को अपदस्थ कर, नयी नियुक्तियां कीं। जनरल मोहम्मद अहमद जमाले नए सेना प्रमुख बने। रविवार को अपने पद की शपथ लेने के बाद जब वे गाड़ियों के काफिले के साथ निकले, तभी आतंकी हमला हुआ। जिसमें वे तो बाल-बाल बच गए, लेकिन पास से जाते हुए वाहन धमाके की चपेट में आए और १३ लोगों की मौत हो गई। महज दो माह पहले ही राष्ट्रपति मोहम्मद ने पद भार ग्रहण किया है। इसके पहले प्रधानमंत्री और विदेश सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य करने का उनका अनुभव है। उन्होंने अमरीका से उच्च शिक्षा ग्रहण की है और सोमालिया व अमरीका दोनों देशों की नागरिकता मोहम्मद अब्दुल्लाही मोहम्मद के पास है। राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने अल शबाब को ६० दिनों का समय दिया कि वह शांति काल निर्मित करे और सरकार का सहयोग करे। लेकिन अल शबाब के इस हमले से जाहिर होता है कि उसने इस शांति प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया है। पश्चिम के विकसित, अतिसुरक्षित देश हों या मिस्र, सोमालिया हों, आतंकी हमले से कोई बच नहीं पा रहा है। दुनिया के तमाम शांतिप्रिय देशों और जनता को अब मिलकर इसका उपाय तलाशना होगा। महज सैन्यशक्ति से आतंकवाद खत्म नहीं होगा।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

समस्या का स्थाई समाधान नहीं

उत्तरप्रदेश में भाजपा सरकार ने चुनावी वादे को पूरा करते हुए किसानों की कर्ज माफी का ऐलान किया है। हालांकि इससे सरकारी कोष पर भार बढ़ेगा, लेकिन किसानों को फौरी राहत मिलेगी, ऐसी उम्मीद है। खबरों में तो यही सामने आ रहा है कि योगी सरकार के इस फैसले से किसान बहुत खुश हैं। देश का अन्नदाता खुश रहे, तो देश की खुशहाली भी तय है। किंतु इसके लिए महज कर्जमाफी से बात नहीं बनेगी। यह तो उस दर्दनिवारक की तरह है, जिससे दर्द थोड़ा कम हो सकता है, लेकिन रोग का उपचार नहीं होगा। यह ध्यान देने वाली बात है कि किसान केवल बैंकों से कर्ज नहीं लेते हैं। हिंदुस्तान में साहूकारों का जाल अब भी फैला है, जो गरीब किसानों की मजबूरी का लाभ उठाकर उनकी जमीन, गहने आदि गिरवी रखवाकर ऋण देते हैं और चक्रवृद्धि ब्याज के चंगुल में किसान फंसे रहते हैं। ऐसे मजबूर किसानों को कर्जमाफी का कोई लाभ नहीं मिलता, क्योंकि इनकी पहुंच बैंक तक नहीं होती। ऋण के अलावा कभी मौसम की मार, कभी फसलों का सही मूल्य न मिलना जैसे कारण किसानों की चिंता को बढ़ा देते हैं। हर साल ८ से १० हजार किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं, इससे ही स्थिति की



अनुमान लगाया जा आकलन भी किया जा इसका उपाय मात्र किसानों का कर्ज माफ अब एक चुनावी स्टंट लोग यह सवाल उठाते उत्तरप्रदेश में ऋण क्यों माफ किया या उन्हें डिफाल्टर होने पर भी क्यों बख्शा हुआ है, उसके लिए किसानों की ऋणमाफी एक सुविधाजनक जवाब सरकार के पास होता है। वैसे उत्तरप्रदेश में ऋणमाफी का फैसला भाजपा के लिए अन्य प्रदेशों में असुविधाजनक होने लगा है, क्योंकि किसानों की दशा हर जगह बिगड़ी ही हुई है। महाराष्ट्र में इस मुद्दे पर पहले ही सियासत जोर पकड़ चुकी है। कांग्रेस और शिवसेना मिलकर सरकार पर दबाव बना रहे हैं कि प्रदेश के किसानों के कर्ज माफ हों। इस मुद्दे पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस दिल्ली आकर केंद्र सरकार से मदद मांग चुके हैं। उधर, कर्नाटक विधानसभा में भी कांग्रेस सरकार ने केंद्र सरकार से ऐसी ही मांग की है। वहां भी लगभग चालीस हजार करोड़ का कर्ज किसानों पर है और अगले साल चुनाव भी होने हैं। बिहार में नीतीश सरकार ने केंद्र सरकार से किसानों की कर्जमाफी के लिए वित्तीय मदद से जुड़ा विस्तृत मांग पत्र भेजने का फैसला किया है। इसके लिए मुख्यमंत्री पूरे राज्य में किसानों के कर्ज की दशा पर रिपोर्ट तैयार करवा रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी किसानों की कर्जमाफी को लेकर पिछले कुछ दिनों से अलग-अलग किसान संगठन आंदोलन चला रहे हैं। जाहिर है हर कोई अपने राज्य के किसानों को कर्जमाफी के जरिए राहत दिलवाना चाहता है। लेकिन इस तात्कालिक उपाय के अलावा सरकारों को कई और पहलुओं पर प्राथमिकता से निर्णय लेने होंगे, जैसे किसानों को बिचौलियों से मुक्त कराया जाए, सही कीमत पर बीज, खाद, सिंचाई के संसाधन उपलब्ध हों, उन्हें उनकी फसलों का उचित समर्थन मूल्य मिले, और सबसे बड़ी बात कि उन्हें भरोसा हो कि उनके बुरे दिनों में सरकार उनके साथ होगी। फिलहाल ऐसा होता नहीं दिख रहा। राजधानी दिल्ली में जंतर-मंतर पर पिछले १८ दिनों से तमिलनाडु के किसान नरमुंडों के साथ अर्धनग्न होकर प्रदर्शन कर रहे हैं। अब उनमें से कुछ ने सिर मुड़वा कर अपना विरोध जताया है। २५ किसानों ने भूख हड़ताल भी की है, जिसमें कुछ की हालत बिगड़ रही है। तमिलनाडु के इन किसानों की मांग है कि राष्ट्रीय बैंकों के उनके कर्ज को माफ करने के साथ उनकी फसलों की उचित कीमत दिलाने का इंतजाम किया जाए। इसके अलावा राज्य में पानी की किल्लत को दूर करने के ठोस उपाय किए जाएं। सूखे और कर्ज के कारण पिछले चार महीनों में लगभग ३०० किसानों की मौत हो गई है। मरने वाले ज्यादातर किसानों ने या तो आत्महत्या की है या फिर सदमे के कारण उनकी मौत हुई है, क्योंकि, इन लोगों ने प्राइवेट बैंकों या सरकारी बैंकों में गहने और जमीन गिरवी रख कर कर्ज लिया है। वह कर्ज अब चुका नहीं पा रहे हैं। जानकारों के मुताबिक ऐसा ही चला तो तमिलनाडु की हालत पिछले १०० सालों में सबसे ज्यादा खराब होने वाली है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी किसानों की लगातार हो रही मौतों पर चिंता जाहिर करते हुए तमिलनाडु सरकार को नोटिस जारी किया है। हाल ही में तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री ई पलानीसामी ने २ हजार २४७ करोड़ रुपये का सूखा राहत पैकेज देने की घोषणा की है। जिसको किसान नाकाफी बता रहे हैं। किसान के हाथों में हल और हंसिया दिखाई दे तो देश को अनाज मिलने की उम्मीद बंधी रहती है, लेकिन अपने मृतक साथियों के कंकाल उनके हाथों में हैं, तो क्या यह बड़े संकट का संकेत नहीं है?

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

गंभीरता का सकता है और यह सकता है कि क्या ऋणमाफी है? करना दरअसल भी बन गया है। जो हैं कि सरकार ने

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

पपीते के पत्ते का रस करे डेंगू से आपकी रक्षा

विटामिन ए, बी, सी, डी, ई और कैल्शियम की भरपूर मात्रा समेटे पपीते के पत्तों में अनेक औषधीय गुण हैं। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ ये इस मौसम में डेंगू से भी रक्षा कर सकते हैं। **डेंगू के प्रभाव से बचाए :** पपीते की पत्तियाँ डेंगू से लड़ने और उसे परास्त करने में कारगर साबित होती हैं। यह गिरते हुए प्लेटलेट्स को सुधारने, डेंगू के दौरान खून में थक्का जमने से रोकने और जिगर की क्षति को रोकने में काफी कारगर साबित होती हैं। इसके लिए एक चम्मच पपीते का रस कुछ दिनों तक लें।

आँखों की रोशनी सुधारे : आँखों में रोशनी की कमी आज की आम समस्या बन गई है। पपीते के पत्ते के रस में विटामिन ए काफी मात्रा में होता है। इस कारण पपीते का रस नियमित रूप से पीने वालों की आँखों की रोशनी में तेजी से सुधार होता है।

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए : आजकल काफी लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर पाई जाती है, ऐसे लोग अक्सर बीमार

पड़ते रहते हैं। पपीते की पत्तियों में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुण पाए जाते हैं। यानी अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आप कुछ दिनों तक पपीते की पत्तियों का जूस पी सकते हैं।



मुंहासों से राहत दिलाए : अगर आप पिंपल्स की समस्या से जूझ रहे हैं तो पपीते के पत्ते से लाभ पा सकते हैं। इसके लिए पपीते की सूखी पत्तियों को पानी में मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को चेहरे पर लगा लें और जब वह पूरी तरह सूख जाए तो पानी से साफ कर लें। कुछ ही दिनों तक ऐसा करने से आपको पिंपल्स से मुक्ति मिल जाएगी और त्वचा निखर जाएगी।

डेंगू से बचाव के अन्य उपाय

१. हल्का पौष्टिक, गरम व सुपाच्य भोजन करें। समुचित विश्राम एवं निद्रा लें तथा व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय स्वच्छता रखें।

२. ५ ग्राम गिलोय चूर्ण को १००

मिली. उबले हुए पानी में मिलाकर बने हुए पेय के साथ २ ग्राम सौंठ चूर्ण का दिन में दो बार सेवन करें। ६ से १२ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए इस औषधि की आधी

मात्रा तथा ६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए चौथाई मात्रा का प्रयोग करें। इस गिलोय युक्त पेय में एक छोटी चम्मच शहद भी मिला सकते हैं।

३. १०-१५ तुलसी पत्र एवं १०-१५ ग्राम धनिया चूर्ण को एक लीटर पानी में १० मिनट तक उबालें और कमरे के तापमान तक ठंडा होने पर इस पेय का एक दिन में ३-४ घंटे के अंतराल पर सेवन करें। **साभार युग ऋषि**

तिलक लगाना जहाँ प्रतिदिन के काम की सफलता का सूचक है वहीं शकुन, अपशकुन भी हैं। यात्रा अथवा किसी विशेष कार्यारंभ के अवसर पर घर से निकलते समय यदि एक शून्य मस्तक व्यक्ति सामने आ जाए तो अपशकुन तथा तिलकधारी आ जाए तो शकुन माना जाता है। तिलक के चार नाम बताए गए हैं। तमालपात्र, तिलक, चित्रक और विशेषक। शास्त्रों में तिलक लगाने के बाद ही संध्या आदि पूजा करने का विधान है। बिना तिलक लगाए किए गए धार्मिक कृत्य सर्वथा निष्फल हो जाते हैं। भारतीय हिन्दू समाज में तिलक धारण का विधान सृष्टि प्रारंभ से ही है। भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति में — “कस्तूरी तिलकम् ललाटपटले वक्षः स्थले



बीमारियों से बचाता है तिलक

पं. मनोहर मंजुल

कौस्तुभं...“ विष्णु, ब्रह्म, शिव आदि सभी देवी-देवता तिलक से सुशोभित हैं। तिलक शोभा का अलंकार ही नहीं, शरीर के स्वास्थ्य, सौभाग्य को बढ़ाता है। अनेक बीमारियों की औषधि है। तिलक नाभि के नीचे के भागों को छोड़कर मस्तक, गला, भुजा, हृदय, पेट आदि पर लगाया जाता है। इन स्थानों पर तिलक लगाने से अंग विशेष के सूक्ष्माणुओं का नाश होता है। अंग विशेष की कांति वृद्धि तथा कार्यक्षमता में बढ़ोतरी होती है क्योंकि फुस्फुस शुद्धि, नाड़ी शुद्धि भी हो जाती है। कठोपनिषद में उल्लेख है कि हृदय में १०१ नाड़ियाँ हैं इनमें से सुषुम्ना नामक नाड़ी मस्तक प्रदेश के सामने से निकलती है। उसके द्वारा ऊर्ध्व की ओर प्रस्थान करने वाला भगवत् भजन की ओर आकृष्ट होकर मोक्ष का अधिकारी होता है। सुषुम्ना नाड़ी के निर्गमक मस्तक प्रदेश स्थल में ही अजाक मर्म है। पित्त वृष्टि होने पर यही लेप किया जाता है। विशेष चिंतन करते हुए भी हम इसी स्थान को ऊंगलियों को पोरों से थामते हैं। पित्त की सीमा से अधिक नहीं बढ़ने देने के लिए इस स्थान पर तिलक लगाने का विधान है। यूँ तो तिलक पूरे ललाट पर लगाते हैं परंतु भौहों के मध्य डाई अंगुली की परिधि में तिलक लगाना चाहिए। शीत ऋतु में केसर, कस्तूरी, गौरोचन आदि से तिलक लगाना चाहिए। इससे भाल प्रदेशीय पित्त सक्रिय बना रहे। ग्रीष्म ऋतु में कर्पूरयुक्त चंदन का तिलक लगाएँ, जिससे सिर दर्द, रक्तचाप, नेत्र जलन आदि से बचा जा सके। तिलक खड़िया मिट्टी गोपीचंदन, गंगादि तीर्थों की पावन मिट्टी यज्ञीय पावन भस्म, श्रीखंड चंदन से तिलक लगाएँ। उत्सव की रात्रि में चंदन का तिलक लगाएँ। मिट्टी और भस्म में दुर्गन्ध और कीटनाशक की स्वाभाविक क्षमता होती है। अतः इनसे तिलक धारण करने का विधान है। तिलक इस बात का परिचय भी करता है कि तिलकधारी व्यक्ति किस सम्प्रदाय का अनुयायी है। भारत में मुख्यतः तीन सम्प्रदाय हैं—वैष्णव, शैव, शाक्त। वैष्णव में रामानंदी, रामानुजी, मध्व, निम्बार्क (चैतन्य), वल्लभ आदि सम्प्रदाया आते हैं। इसके अलावा सूर्य और गणपति के उपासक अलग-अलग प्रकार के तिलक लगाते हैं। कुर्म पुराण में तिलक को मंगल विधान होने के साथ-साथ चाक्षुष्य, कांतिवर्धक एवं आयु को बढ़ाने वाला बताया है। इसे तृतीय नेत्र का स्थान दिया गया है, क्योंकि सर्वप्रथम किसी भी व्यक्ति का ध्यान इसी पर केन्द्रित होता है। दोनों भौहों के मध्य तिलक सुषुम्ना की विद्यमानता के कारण अमिट शक्ति के केन्द्र रूप में योग साधना में मान्य किया गया है। तिलक त्रिगुणात्मक माया के आकर्षण से बचाकर उसे अंशी का सही अंश बनाने की दिशा में प्रेरित करता है।

करुं पुकार भगत सिंह से

करुं पुकार भगत सिंह तू फिर से आजा।
मुझ में समाके फिर आजादी दिलवाजा।।
सुनता नहीं आज अपना भी कोई यहां,
फिर से हुए बंद कान खोलने तू आजा।
मेरी रगों में खून थम सा गया है जो,
उस में तू आके इक नया जोश जगा जा।
पहले लूटा था बाहर वालों ने हमको,
अब तू आके अपनों से भी बचा जा।
हर कोई तेरे नाम के नारे है लगाता,
नारों को आजादी की आवाज बना जा।
जजबा देश भागती का जो मर पड़ा,
तू आके उस जजबे का दिल धडकाजा।

हरदीप बिरदी

डायबिटीज को प्राकृतिक तरीकों से करें कंट्रोल

मिताली जैन

वर्तमान समय में, मधुमेह सिर्फ भारत में नहीं बल्कि पूरे विश्व में महामारी का रूप धारण कर चुका है। भारत को तो विश्व का डायबेटिक कैपिटल अर्थात् मधुमेह की राजधानी कहकर पुकारा जाने लगा है। यहाँ आपको हर घर में कोई न कोई व्यक्ति मधुमेह पीड़ित अवश्य मिल ही जाएगा। इतना ही नहीं, मॉडर्न युग में सिर्फ वयस्क या उम्रदराज लोग ही नहीं, बल्कि छोटे बच्चे व गर्भवती महिलाएँ भी इसकी चपेट में आ चुकी हैं। ऐसे में डायबिटीज को कंट्रोल करने के लिए अक्सर लोग दवाईयों या इंसुलिन का सहारा लेते हैं लेकिन अब आपको ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। अगर आप चाहें तो अपने खान-पान में कुछ बदलावों की मदद से भी मधुमेह को काफी हद तक कंट्रोल कर सकते हैं। अगर आप अपने मधुमेह को नियंत्रित करना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप अपनी डाइट में बादाम को भी थोड़ी जगह दें। अमेरिकन कॉलेज की न्यूट्रिशन पत्रिका में प्रकाशित हुए अध्ययन के अनुसार, बादाम को नियमित रूप से खाने से आपका मधुमेह काफी हद तक कंट्रोल होता है। १६ सप्ताह से अधिक समय तक हुए अध्ययन में पाया गया कि बादाम खाने वाले व्यक्तियों का मधुमेह काफी नियंत्रित हुआ था।

अध्ययन बताते हैं कि दालचीनी के प्रयोग से टाइप २ मधुमेह से पीड़ित लोगों को काफी फायदा होता है। यह रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने में प्रभावी होता है। साथ ही यह एलडीएल कोलेस्ट्रॉल व ट्राइग्लिसराइड्स को भी काफी हद तक कम करता है, जिसके कारण डायबिटीज काफी हद तक कंट्रोल होता है। मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति को अपने भोजन में कुछ ऐसे खाद्य पदार्थों को शामिल करना चाहिए, जिससे उन्हें पर्याप्त मात्रा में जिंक प्राप्त हो। दरअसल, जिंक एक ऐसा खनिज है जो इंसुलिन हार्मोन के उत्पादन और उसके भंडारण में मदद करता है। इससे रक्त में शर्करा का स्तर सामान्य रहता है। कुछ शोधों में भी पाया गया है कि टाइप २ मधुमेह पीड़ित व्यक्तियों के शरीर में जिंक का स्तर बेहद निम्न था। अपने शरीर में जिंक की मात्रा बढ़ाने के लिए आप अंडे की जर्दी, कस्तूरी, अदरक की जड़, बादाम व अखरोट आदि खा सकते हैं। मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति को केला, शरीफा, काले अंगूर, खजूर, अनानास और आम जैसे फलों से दूर ही रहना चाहिए। साथ ही आपको मांसाहारी भोजन,

शेष पृष्ठ 11 पर

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। ऐसा आर्य समाज के छठे नियम में दिया है। शारीरिक व आत्मिक उन्नति दीर्घायु हेतु आवश्यक है परन्तु जब समाज रुग्ण हो तब उसके लिए भी उपचार आवश्यक है। जिसे सत्यासत्य ज्ञान के उपदेश से समझा कर किया जा सकता है। इसके लिए जितना भी हो सके प्रचार करना ही एक विकल्प है। आज समाज में कुरीतियाँ बढ़ रही हैं। अच्छे पढ़े-लिखे लोग डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., नेता, अभिनेता तक पीर-मजारों पर चादर चढ़ाते, मूर्ति पूजा करते देख जा सकते हैं, घरों में नींबू व मिर्च बाँधकर दरवाजों पर लटकाते देखे जा सकते हैं। बिल्ली रास्ता काट जाए तो अपशकुन होना मानते हैं। भूत-प्रेत, गण्डा और तावीज में विश्वास करना देख सकते हैं और तो और क्या टी.वी. चैनल जितने भी चल रहे हैं उनमें कार्यरत व चैनलों पर देख-रेख अथवा नियंत्रण करने वाले अधिकारी व सरकार से सम्बन्धित नहीं हैं? वह भी पढ़े-लिखे ही होंगे परन्तु फलित ज्योतिष के चैनल दिन-रात हनुमान यंत्र, सुरक्षा यंत्र, सुरक्षा कवच, मणि व पत्थर से बनी अंगूठियों का प्रचार कर जनता को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। आज विज्ञान का युग है, सब कुछ अच्छी प्रकार से देखा-परखा जाता है परन्तु फिर भी अनेक स्त्री-पुरुष तांत्रिकों के तंत्र जाल की दुनिया में फंसे हुए हैं और अंधविश्वासों को बढ़ावा दे रहे हैं। अपने विवेक से नहीं देखते कि सत्य क्या है, असत्य क्या है। घरों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ जिनमें स्थान-स्थान पर विभिन्न प्रकार के देवता हैं। कुछ लोग गुरुडम वाद में घिरे हैं। नए-नए रूप धारण कर भोली-भाली जनता को लूट रहे हैं। ये गुरु चमत्कार भी दिखाते हैं। किसी का पर्स खुलवाना, किसी को रसगुल्ले खिलाना, किसी को लाल-पीले वस्त्र करवाने को कहते तथा संतान होने, कोठी कार बंगला बनवाने रात-रात में धनवान होने का आशीर्वाद देते हैं। सारा ठेका इन्होंने ही ले रखा है और

भोली जनता इसके जाल में फंस जाती है। अभी हरियाणा में ढोंगी रामपाल की गिरफ्तारी हुई, आशाराम जेल में है। पहले भी चन्द्रास्वामी, गीरेन्द्र ब्रह्मचारी जेलों में रहे हैं। ऐसे ढोंगियों की संख्या नित्य प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

इधर दहेज हत्या समाचार

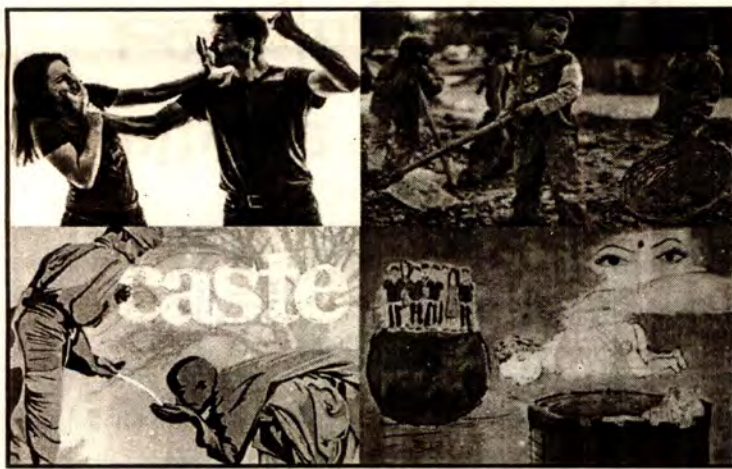
में तो कई-कई लाख में हो पाते हैं, दस-पन्द्रह या बीस लाख लग जाते हैं। वह सब पैसा दूल्हे का पिता और दूल्हा बेटी वाले से झपट लेता है फिर भी अधिकांशतः बेटीयाँ ससुराल में सुरक्षित नहीं। और हैं तो बहुत कम हैं। जहाँ आर्य विचारधारा व आचरण वाले श्रेष्ठ व्यक्ति

आदि सब प्रदूषण होकर वातावरण दूषित हो जाता है। अतः विवाह का एक निश्चित नियम सबके लिए एक समान बनाना चाहिए। धनाढ्य निर्बल सबका एक समान नियम होना चाहिए। इधर हत्या, लूट व बलात्कार की घटनाएँ दिन-रात सुनने व देखने में आती हैं।

है वही करना चाहिए। टीवी तो घर-घर में प्रचार का माध्यम है। टीवी में धारावाहिक निर्माता कहते हैं कि जो समाज में होता है वही दिखाते हैं। ऐसी बात नहीं। व्यावसायिक सिनेमा निर्माताओं ने तो नग्नता की सीमा पार कर दी है। इसे वह उन्नति बताते हैं। पोर्न व एक्स वीडियो का होना लज्जाजनक है। धन कमाने के लिए इस देश की संस्कृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं और क्योंकि चैनल अधिकतर विदेशी हैं इसलिए हमारी संस्कृति में विष घोल कर घिनौना खेल खेला जा रहा है और जहाँ भाई-बहन, माता-पिता बैठे हों ऐसे में इन कामुक दृश्यों वाले भौंडे चित्र व संवादयुक्त धारावाहिकों का क्या उपयोग है? यह समाज को क्या शिक्षा दे रहे हैं? इनसे समाज में सांस्कृतिक प्रदूषण ही बढ़ रहा है। व्यक्ति युवा अपने इतिहास के गौरव से अपनी संस्कृति से दूर हो चकावौंध में भटक रहे हैं। इन आधुनिक व्याधियों का समाधान आर्यों के पास ही है जो उनके सत्योपदेश प्रचार कार्य को बढ़ा कर करने, गति लाने से ही संभव होगा।

कुरीतियाँ बढ़ रही हैं

डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह



पत्रों में टीवी अपराधिक घटनाओं वाले चैनलों पर और आस-पड़ोस में बहुओं बेटीयों को जला कर मारने की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। इन के लोभी पहले तो धन व गाड़ी आदि लेने से मना करते हैं परन्तु थोड़ी बात आगे बढ़ते ही गाड़ी व नकदी आदि का दबाव बनाना आरम्भ कर देते हैं। सगाई आदि की रस्म हो जाने पर बेटी वाला दबाव में सब कुछ दे देता है परन्तु भूखे भेड़ियों का पेट नहीं भरता। दूसरे की बेटी को बहू बनाकर प्रताड़ित करना आरम्भ कर देते हैं। बेटी भी अपने घर नहीं बताती और बताती भी है तो समझौता करके ससुराल वाले ले जाते हैं। वहाँ कौन देख रहा है अकेली बेटी फँस जाती है, और अधिक प्रताड़ित करते हैं। अंत में अनेकों को मार दिया जाता है।

दहेज एक समस्या है। बारात ले जाना भी एक समस्या है। बड़े-बड़े मैरिज होम्स में लाखों का धन व्यर्थ में लगाया जाता है। आज दूल्हों का मोल-भाव किया जाता है। कहते हैं शिक्षा महंगी हो गई है—आईटीआई, पोलिटेक्निक, इंजीनियरिंग, बीई मेडिकल, एम. बी.ए. बी.सी.ए. आदि कोर्स प्राइवेट

होते हैं क्योंकि वैदिक धर्म ही ऐसी शिक्षा है जहाँ पराई बेटी को अपने घर में बहू के स्थान पर रख कर बेटी की भाँति महत्त्व दिया जाता है। पहली बात तो विवाह हेतु ऐसी कोई व्यवस्था बनवाई जाए जो पूर्णतः वैदिक रीति से सम्पन्न हो और बेटी को ससुराल में यातना न मिले, घृणा से न देखा जाये। यह केवल आर्य धर्म के ज्ञान से ही संभव है। अतः जन-जन में आर्य धर्म के प्रति चेतना जाग्रत करनी होगी। दहेज पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। मैरिज होम बन्द होने चाहिए। विवाह में डी.जे., ढोल-ढपाड़े, बाजे बन्द हों। चमक-दमक-सजावट की सीमा रेखा निश्चित हो। बारातियों की संख्या भी निश्चित हो। वैसे भी विवाह सुझाए जाते हैं पत्रों के अनुसार, एक ही दिन में इतने विवाह होते हैं कि मैरिज होम कम पड़ जाते हैं, रास्ते बन्द हो जाते हैं, आवागमन ही अवरुद्ध हो जाती है। बाजारों में सब्जी, टैन्ट, फर्नीचर, दूध, पनीर व अन्य सामान नहीं मिल पाता, सब्जियाँ आदि महंगी हो जाती हैं। वाहन बस रेलों में स्थान नहीं मिलता, अन्य घटनाएँ भी होती हैं जब इतनी भीड़ होती है। स्थिति भयानक हो जाती है, आतिशबाजी

इनका प्रचार धारावाहिक व पराधिक घटनाओं का चित्रण व टीवी पर उन्हें धारावाहिक बना जनता के सामने परोसने से भी हो रहा है जहाँ स्त्री के अंगों का प्रदर्शन, अर्धनग्न, कामुकता की मुद्राएँ, कामुक दृश्य, युवक युवतियों के जवानी में रंगे कामुक प्यार के दृश्य, फिल्मों में भी कामुक-दृश्य संगीत को दिखाना, भौंडे व अश्लील संवाद जनता पर क्या प्रभाव डालेंगे? इनसे आने वाली पीढ़ी को अच्छा संदेश तो नहीं मिलेगा। वह भी यही समझेंगे कि जैसे फिल्मों दिखाया जाता

यहाँ रहते हैं यमराज

पायल मित्तल

हिमाचल प्रदेश का शहर है चंबा। 'चंबा' जिला है, जो मंदिरों और हैंडीक्राफ्ट के लिए जाना जाता है। चंबा को राजा साहिल वर्मन ने ६२० ई. में स्थापित किया था। इस नगर का नाम उन्होंने अपनी पुत्री चंपावती के नाम पर रखा था। चंबा में एक ऐसा मंदिर है जो घर की तरह दिखाई देता है। इस मंदिर के पास पहुँच कर भी बहुत से लोग मंदिर में प्रवेश करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। इसका कारण यह है कि, इस मंदिर में धर्मराज यानी यमराज रहते हैं। संसार में यह इकलौता मंदिर है जो धर्मराज को समर्पित है। इस मंदिर में एक खाली कमरा है जिसे चित्रगुप्त का कमरा माना जाता है। चित्रगुप्त यमराज के सचिव हैं जो आत्मा के कर्मों का लेखा-जोखा रखते हैं।



पौराणिक मान्यता के अनुसार जब किसी की मृत्यु होती है तब यमराज के दूत उस व्यक्ति की आत्मा को पकड़कर सबसे पहले इस मंदिर में चित्रगुप्त के सामने प्रस्तुत करते हैं। चित्रगुप्त जीवात्मा को उनके कर्मों का पूरा ब्योरा देते हैं। इसके बाद चित्रगुप्त के सामने के कक्ष में आत्मा को ले जाया जाता है। इस कमरे को यमराज की कचहरी कहा जाता है। कहा जाता है कि यहाँ पर यमराज कर्मों के अनुसार आत्मा को अपना फैसला सुनाते हैं। कहते हैं इस मंदिर में चार अदृश्य द्वार हैं जो स्वर्ण, रजत, तांबा और लोहे के बने हैं। यमराज का फैसला आने के बाद यमदूत आत्मा को कर्मों के अनुसार इन्हीं द्वारों से स्वर्ग या नर्क में ले जाते हैं।

जो पहल भारत को अपने क्षेत्रीय भूरणनीतिक हितों के लिए दशकों पूर्व करनी चाहिए थी आज अमेरिकी कांग्रेस के कुछ प्रभावशाली सदस्यों ने बलूचियों के लिए आत्मनिर्णय और पूर्ण स्वायत्तता की मांग का एक प्रस्ताव रख कर की। बलूचियों की हत्या और उनके मानवाधिकारों पर निरन्तर पड़ते संकटों के कारण इस समस्त प्रकरण में ओबामा प्रशासन से हस्तक्षेप की मांग की गई है। अमेरिकी सुरक्षा विशेषज्ञों और कुछ सिनेटरों का मत है कि वाशिंगटन को बलूचियों की पाकिस्तान से पृथक होने की मांग को समर्थन दिया जाए। अमेरिकी और नेटो सैन्यबलों को अफगानिस्तान में आवागमन की सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी यह आवश्यक माना जा रहा है। पाकिस्तान इस प्रस्ताव से बौखलाया है पर सारे क्षेत्र में आतंकवाद विरोधी अभियान की सफलता के लिए बलूचियों की स्वतंत्रता का पहला कदम अनिवार्य माना जा रहा है। ऐतिहासिक रूप से बलूची अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए कटिबद्ध हैं और इसलिए पाकिस्तान के आधिपत्य को गुलामी कहते रहे हैं। हमें भारत में यह भूलना नहीं चाहिए कि स्वतंत्रता के पहले बलूची और पख्तून ने जिन्ना की मुस्लिम लीग द्वारा देश के बंटवारे का भी समर्थन नहीं किया था।

“बलूची राष्ट्र को आत्म निर्णय का अधिकार इतिहास ने दिया है”— आज के अमेरिकी प्रस्ताव के ये शब्द कैलीफोर्निया के रिपब्लिकन दल के नेता डाना रोहराब्राचर ने दो अन्य रिपब्लिकन कांग्रेस मेन लुई गोहर्मट (टेक्सास) और स्टीव किंग (आयोवा) के समर्थन के साथ विमर्श के लिए सदन में रखे हैं। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि वर्तमान में सारा बलूची राष्ट्र—तीन देशों के बीच बँटा है—ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान। जहाँ तक पाकिस्तान स्थित बलूची जनसंख्या का प्रश्न है, वह हिंसा, भेदभाव, नरसंहार और सुनियोजित हत्याओं का शिकार है। इसलिए बलूची राष्ट्र को अन्य लोगों की तरह अपने को स्वतंत्र घोषित करने का अधिकार है। अमेरिका की विशाल सैनिक सहायता और शस्त्रास्त्रों का उपयोग इस्लामाबाद अपने ही बलूची नगरिकों के विरुद्ध कर रहा है जो स्वीकार्य नहीं है।

क्योंकि बलूचिस्तान प्राकृतिक संसाधनों जैसे गैस आदि की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र है इसलिए इस्लामाबाद की पंजाबी और पख्तून नौकरशाही इसका घोर शोषण कर इसे पिछड़ा बनाए हुए है, यह आरोप है। बलूचिस्तान पश्चिमी पाकिस्तान का वह प्रान्त है जो दक्षिण में अरब सागर, उत्तर में अफगानिस्तान व पश्चिमी सीमा पर ईरान को छूता है। यद्यपि यह 3,80,960 वर्ग किलोमीटर का

यहया खान ने अपनी सेना की टुकड़ियाँ वहाँ से हटा ली।

बलूचिस्तान में सबसे गम्भीर लड़ाई तब भड़की जब भुट्टों ने फरवरी 1973 में बलूची प्रान्तीय एसेम्बली इस आरोप के साथ भंग की क्योंकि उनके अनुसार बलूची नेता सोवियत संघ और इराक से मिलकर पाकिस्तान को तोड़ना चाहते हैं। तब से बलूची पाकिस्तान सरकार को खुलकर शत्रु मानने लगे थे। विभाजन के

के नवाब अकबर खान बुगली ने निजी 8000 सशस्त्र कबायलियों के जरिए पाकिस्तानी सेना से टक्कर लेने की घोषणा की। मुशर्रफ को झुकना पड़ा क्योंकि वे ईरानी तेल के लिए पाकिस्तान की पाईप लाइन बलूचिस्तान से होकर लाना चाहते हैं। करोड़ों डालर की चीनी सहायता से वहाँ के ग्वादर बन्दरगाह को भी वे विकसित करना चाहते हैं। क्योंकि पाकिस्तानी अणुबम का परीक्षण

कबायली नेता कह कर अनदेखा नहीं किया जा सकता है और एक गुफा में उनकी हत्या के प्रकरण से ऐसी छवि प्रचारित की जा रही है थी जैसे किसी अत्यन्त पिछड़े, संकीर्ण मनोवृत्ति वाले जनातीय समूह की अगुवाई कर रहे थे। सच तो यह है कि बुगली कबीले के वंशानुगत प्रमुख नवाब अकबर खान बुगली असाधारण नेता थे। उनकी शिक्षा लाहौर के एटचीसन कॉलेज के बाद आक्सफोर्ड में हुई थी। बार बार उस दूरदराज की गुफा को दिखाकर ऐसा दुष्प्रचार हो रहा था जैसे वे कोई भगोड़े थे जिसे सेना ने खोजकर उनके दो पोतों व कुछ और नेताओं को मार डाला। वे एक मंजे हुए राष्ट्रवादी और इसलिए अरसे से पाकिस्तानी राष्ट्रपति की आंखों की किरकिरी बने हुए थे। अपनी मृत्यु से पहले एक पाकिस्तानी पत्रिका “हेराल्ड” में (मार्च 2006) नवाब अकबर बुगली ने एक साक्षात्कार देते हुए कहा था— जनरल मुशर्रफ ने चेतावनी दी है कि वे हमें इस तरह मारेंगे कि हम खुद नहीं समझा पाएंगे। वे हमें जल्दी ही मौत देने का वादा कर रहे हैं। वे कुछ बलूची नेताओं को तो मार सकते हैं पर उभरते बलूची राष्ट्र को नहीं। यह बात सच सिद्ध हुई थी और उनकी नृशंसता से स्वतंत्रता की भड़की चिनगारी अभी भी सुलग रही है तथा पाकिस्तानी राजनीतिक प्रतिरोध की यह आग अभी थमी नहीं है। फरवरी 2012 के प्रारंभ में नवाब अकबर खां बुगली की पुत्री और पौत्री की कराची के अत्यन्त सुरक्षित कहलाने वाले क्षेत्र विलंकटन में हत्या कर दी गई। यह हत्यायें बलूच नेता भी अकबर बुगली के पोते ब्रमदाध बुगली को जो बलूच रिपब्लिकन पार्टी के प्रमुख को संकेत देने के लिए है कि वे भी अगला निशाना बना सकते हैं। बलूचिस्तान में चाह कोई भी बड़ा नेता हो यदि वह कहता है कि वह पाकिस्तान का हिस्सा नहीं है उसे मौत की दामकी दी जाती है।

आज अमेरिकी मीडिया में यह समाचार भी आ रहे हैं कि पाकिस्तानी आई. एस. आई ने स्वर्गीय नवाब अकबर खान के प्रपौत्र ब्रमदाध बुगली और काबुल स्थित भारतीय राजदूत जयन्त प्रसाद की हत्या के लिए एक षडयंत्रकारी को डेढ़ मिलियन डालर की रकम देने की पेशकश की। क्या

शेष पृष्ठ 11 पर

जलता बलूचिस्तान—पृष्ठभूमि

अमेरिकी कांग्रेस के रिपब्लिकन सिनेटरों द्वारा बलूचिस्तान को पाक से स्वतंत्र कराने की मांग का प्रस्ताव!

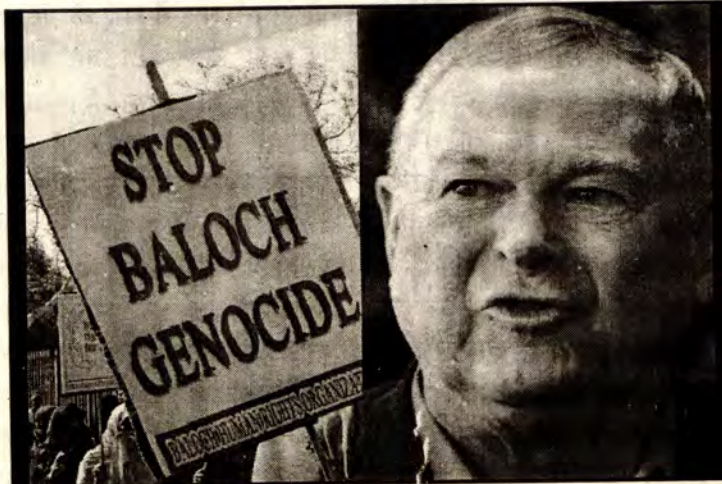
हरिकृष्ण निगम

विस्तृत भूभाग है पर सच देखा जाए तो इसकी राजधानी क्वेटा सहित सारा क्षेत्र पाकिस्तान के जन्म से ही अशान्ति पूर्ण ही नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की मांग के साथ जूझता रहा है। अंग्रेजों द्वारा 1947 के विभाजन के समय से ही एक बड़ी बलूची जनसंख्या ईरान और अफगानिस्तान में भी थी इसलिए उन्हें पाकिस्तान के अन्दर बलूचिस्तान स्वीकार नहीं था और वे स्वतंत्र अस्तित्व चाहते थे।

साफ है कि बलूचिस्तान की अशान्ति की पृष्ठभूमि में 1947 के विभाजन के समय से ही विघटन के बीज विद्यमान थे। पहली बार 9 अप्रैल 1948 में पाकिस्तानी सेना ने कलाल पर हमला किया था जब बलूच नेशनल लिबरेशन कमेटी के प्रमुख प्रिन्स अब्दुल करीम ने पाकिस्तान में मिलने का विरोध किया था और स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। बलूची अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के पक्ष में थे। सन् 1950 जब पूर्वी पाकिस्तान में बंगाली राष्ट्रवाद फैला, बलूचिस्तान पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए बलूची नेताओं को भी जल में डाला गया था और वायुसेना द्वारा विद्रोहियों पर बमबारी भी की गई। 1950 के बाद वहाँ गुरिल्ला, युद्ध का प्रारंभ हुआ जिसमें एक ओर झलावन के मंगल जनजातीय क्षेत्र और दूसरी ओर मर्री और बुगली क्षेत्र प्रभावित रहे। यह संघर्ष 1965 तक चलता रहा जिसके बाद

समय कलात के तत्कालीन शासक मीर अहमद यार खान स्वतंत्रता चाहते थे पर अंग्रेजों ने इस पर चुप्पी साधी थी क्योंकि वे सीमा से लगे ईरान और अफगानिस्तान

भी उसी क्षेत्र की चगाई पहाड़ियों में किया गया था इसलिए मुशर्रफ चाहे बुगली के नवाब हों या सामान्य बलूची टकराव नहीं चाहते थे। इतना सब होने पर भी



से भविष्य में निपटने के लिए इस छोटे से राज्य की स्थापना के विरुद्ध थे।

फिर जनवरी 2005 की वह विस्फोटक घटना हुई जब क्वेटा—स्थित पाकिस्तान पेट्रोलियम लि० के परिसर में एक महिला डाक्टर के आवास में चार पाकिस्तानी सैनिकों ने घुसकर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया। इस घटना से इतनी व्यापक हिंसा भड़की कि जनरल मुशर्रफ को 8500 सैनिक, 20 टैंक और 6 हेलीकाप्टर गनशिप भेजने पड़े थे क्योंकि स्थिति गृहयुद्ध जैसी थी। रेलवे लाइनें और प्राकृतिक गैस की पाइप लाइनें नष्ट की गईं। बलूचियों के एक बड़े नेता अताउल्ला खान ने इसे पाकिस्तान के विरुद्ध अन्तिम संघर्ष कह डाला। बुगली कबीले

बलूचिस्तान फिर सुलग उठा है। हाल में बलूचियों व पाकिस्तानी सैन्य बलों के बीच हुई झड़पों के बाद पाकिस्तान ने सुई गैस के संयंत्रों की 95 किलोमीटर परिधि से सारे नागरिकों को बाहर निकाल दिया है। विद्रोह से निपटने के लिए नई सैनिक छावनियाँ बनाई गई हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार अणु संयंत्रों पर भी अतिरेकियों द्वारा कब्जा करने की सम्भावना है। बलूचिस्तान की सर्वाधिक सनसनीखेज राजनीतिक हत्याओं ने सर 2006 की 20-वर्षीय नवाब अकबर बुगली की जनरल मुशर्रफ के आदेशों पर की गई हत्या से बलूचिस्तान का इतिहास आज भी उबरा नहीं है। आक्रोश की आग ने उसे अलगाववाद के लिए एक नया प्रभावी प्रतीक दे डाला है। अकबर खान बुगली को मात्र

जिन पर देश बदलने की जिम्मेदारी है वो नहीं बदल रहे तो देश कैसे बदलेगा। एक नई उम्मीद एक सपना इस देश की हर आँख में पल रहा है कि 'मेरा देश बदल रहा है।' सपना टूटा आँख खुली, हर दिल को समझने में जरा देर लगी कि लोग हैं कि बदल नहीं

२००० रुपये बदलने का इंतजार करता रहा और आपने करोड़ों बदल दिए?

और इतने बदले कि बैंक नए नोटों से खाली हो गए लेकिन आप रुके नहीं।

आज हर रोज छापेमारी में जो नोट जब्त हो रहे हैं वो किसी

आरोप है जिसके बाद एक्सिस बैंक ने अपने १६ अधिकारियों को निलंबित कर दिया है।

मध्यप्रदेश के खरगोन जिले में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बैंक मैनेजर और क्लर्क को कुछ विशिष्ट लोगों के काले धन को सफेद करते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया है। अलवर अर्बन सहकारी बैंक में १२ करोड़ ३२ लाख से अधिक के काले धन को सफेद करने का मामला प्रकाश में आया है। देश के अनेक हिस्सों से बैंकों द्वारा इस प्रकार की गतिविधियों में लिप्त होने की सूचना के बाद

१००० और ५००० के नोट प्रचलन में थे आज की तारीख तक लगभग १२ करोड़ के प्रतिबंधित नोट बैंकों में जमा हो चुके हैं जबकि ३० दिसंबर तक का समय अभी शेष था और ऐसी उम्मीद है कि अभी बैंकों में और धन जमा होगा। अगर आंकड़े सही हैं तो इसका अर्थ यह है कि हमारी अर्थव्यवस्था का सारा काला धन सफेद हो चुका है इसे क्या कहा जाए? ८ नवंबर के बाद से १६.४८ लाख नए खाते बैंकों में खोले गए, ४.५४ लाख जीरो बैलेंस वाले जनधन खातों में नगदी जमा हुई,

भेंट चढ़ाता है इस सिस्टम से हार जाता है, लड़ नहीं पाता तो प्रतिशोध से भर जाता है। अपने ही देश में अपने ही देशवासियों से लूटे जाने की बेबसी। कभी हमारी सरकार ने सोचा है कि भारत के जिस आम आदमी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में देश के लिए अपना सब कुछ लुटा दिया था औरतों ने अपने गहने कपड़े ही नहीं अपने बच्चों तक को न्यूँछावर कर दिया था, वो आम आदमी जो मन्दिरों में दान करने में सबसे आगे होता है वो आम आदमी आज टैक्स की चोरी क्यों करता है?

वो आम आदमी जो अपनी मेहनत की कमाई का कुछ हिस्सा भ्रष्टाचार के दानव को सौंपने के बाद अगर अपनी कमाई का कुछ हिस्सा छुपाकर अपने नुकसान की भरपाई करके अपने बच्चों का भविष्य संवारने के लिए लगाता है तो काले धन और भ्रष्टाचार की इस लड़ाई में भी सबसे पहले वह ही क्यों पिस रहा है? और दूसरी ओर जिन्होंने सरकार से हर महीने काम करने की तनखाह लेने के बावजूद आम आदमी की मेहनत की कमाई में से मोटी रकम घूस में लेकर काला धन बनाया था वो आज भी अपना काला धन सफेद करके तनाव मुक्त हो कर घूम रहे हैं। यह सभी न सिर्फ देश के कानून बल्कि प्रधानमंत्री को खुली चुनौती देने से भी बाज नहीं आ रहे हैं। प्रधानमंत्री जी को देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचाने वाले काले धन का तो पता था लेकिन शायद वे अपनी ही सरकार में काले धन के संरक्षकों की संख्या और उनकी 'योग्यता' का शायद अंदाजा नहीं लगा पाए। वे इस बात को भूल गए कि जिन लोगों के सहारे वे भ्रष्टाचार के खिलाफ युद्ध का आगाज कर रहे हैं वे स्वयं भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। जिनके हाथों में तिजोरी की चाबी है वे ही तिजोरी खाली करने के शुरू से आदी हैं।

परिणामस्वरूप जो आम आदमी सरकार की भ्रष्टाचार के खिलाफ इस लड़ाई में सरकार के साथ खड़ा था आज उस आम आदमी के सब्र का बाँध अब टूटने लगा है। अगर सरकार भ्रष्टाचार और काला धन खत्म करना ही चाहती है तो सबसे पहले सरकार को आम आदमी को यह भरोसा दिलाना

शेष पृष्ठ 10 पर



रहे हैं। आम आदमी जो पहले अपनी परिस्थिति बदलने का इंतजार करता था आज देश की परिस्थितियों के बदलने का इंतजार कर रहा है।

हाँ इंतजार के अलावा वो सवाल कर सकता है कि हर बार उम्मीद टूट क्यों जाती है?

इंतजार इतना लंबा क्यों होता है?

नेताओं और ब्यूरोक्रेट्स को तो इस देश का हर नागरिक जानता है लेकिन बैंक के अधिकारी।

आप से तो यह अपेक्षा देश ने नहीं की थी।

प्रधानमंत्री जी ने आपके कंधों पर इस देश को बदलने की नींव रखी थी और आप ही नींव खोदने में लग गए?

आम आदमी लाइन में खड़ा

के हक के थे।

किसी के भोग विलासिता के लिए किसी की जरूरत का आपने गलत घोंट दिया।

वो करोड़ों की रकम जो मुट्ठी भर लोगों से जब्त हुई वो करोड़ों की आवश्यकताएँ पूरी कर सकती थी। यही इस देश का दुर्भाग्य है जब वो लोग जो जिनके कंधों पर देश को बदलने की जिम्मेदारी है वो ही नहीं बदल रहे तो देश कैसे बदलेगा?

खबर है कि एचडीएफसी, आईसीआईसीआई और एक्सिस बैंक काले धन को सफेद करने के कार्य में लिप्त पाए गए। प्रवर्तन निदेशालय ने एक्सिस बैंक के दिल्ली के कश्मीरी गेट ब्रांच दो मैनेजरों को गिरफ्तार किया था जिन पर तकरीबन ४० करोड़ रुपये के काले धन को सफेद करने का

आखिर कब बदलेगा देश

डॉ० नीलम महेन्द्र

ईडी द्वारा मनी लॉन्ड्रिंग के शक में देश के ५० बैंकों की ब्रांच में छापेमारी की कार्यवाही की जा रही है। इस प्रकार की खबरें आजकल हर रोज अखबारों की सुर्खियाँ बनी हुई हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने नोट बंदी का कदम भ्रष्टाचार रोकने के लिए उठाया था लेकिन १० नवंबर से लेकर आज तक इस एक महीने में जितना भ्रष्टाचार हुआ है उतना तो देश के इतिहास में शायद आज तक नहीं हुआ होगा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में लगभग १४.५ करोड़ के

१५० मनरेगा खातों से बिना खाताधारकों की जानकारी के बिना लेनदेन करने का मामला पंजाब में सामने आया।

जब रक्षक ही भक्षक बन जाए और चोर ही कोतवाल बन जाए तो? आम आदमी केवल इसका शिकार है लेकिन कुर्सी पर बैठा राजनेता अथवा सरकारी अधिकारी इसका जन्मदाता है जिसके पास अधिकार है वह अपनी सत्ता अपनी शक्ति का उपयोग नहीं दुरुपयोग करता है।

आम आदमी अपनी मेहनत की कमाई भ्रष्टाचार के दानव की

संवैधानिक राष्ट्रभक्ति है।

उच्चतम न्यायालय की पीठ ने कहा कि कोई भी व्यक्ति राष्ट्रगान बजाने की एवज में व्यावसायिक लाभ नहीं ले और इसका नाटकीय तौर पर प्रयोग भी नहीं किया जाए। शीर्ष अदालत ने कहा कि अवांछित वस्तुओं पर राष्ट्रगान ना तो मुद्रित किया जाए और ना ही किसी भी रूप में इसे उन पर दर्शाया जाए। न्यायालय ने विभिन्न कार्यक्रमों में राष्ट्रगान बजाने और इसके संक्षिप्त प्रारूप को कहीं भी बजाए जाने पर भी पाबंदी लगा दी है। न्यायालय ने निर्देश दिया कि इस आदेश को इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में प्रचारित किया जाए और इसका पूरी तरह से पालन किया जाए। पीठ ने कहा, 'अब समय आ गया कि लोग यह महसूस करें कि वे एक राष्ट्र में रहते हैं' और 'यहाँ तक कि शास्त्रों में भी राष्ट्रवाद को स्वीकार किया गया है।' श्याम नारायण चौकसी ने जनहित याचिका दायर कर न्यायालय से यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया था कि राष्ट्रगान को देश भर के सिनेमा हॉल में फिल्म प्रारंभ होने से पहले बजाया जाए और इसे बजाए जाने और अधिकारिक कार्यक्रमों में जहाँ संवैधानिक पदों पर आसीन शख्सियतें मौजूद हों, वहाँ इसके गायन के बारे में बाकायदा नियम बनाए जाएँ। शीर्ष अदालत ने पिछले महीने केंद्र को नोटिस जारी कर यह बताने का निर्देश दिया था कि राष्ट्रगान के अपमान के दायरे में क्या-क्या आता है।

साभार न्यू दिल्ली रिपोर्टर

अब गुँजेगा राष्ट्रगान

यह मेरा देश और मातृभूमि

उच्चतम न्यायालय ने एक आदेश में देश में सभी सिनेमाघरों में राष्ट्रगान बजाना अनिवार्य कर दिया है। राष्ट्रगान फिल्म शुरू होने से पूर्व बजेगा। सभी दर्शक राष्ट्रगान के दौरान खड़े होंगे। इस दौरान सिनेमाघर के सभी दरवाजे बंद होंगे ताकि कोई बाहर नहीं जा सके।

राष्ट्रगान जब शुरू हो तो थियेटर के पर्दे पर राष्ट्रीय ध्वज दिखाया जाये। न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा और अमिताभ राय की पीठ ने कहा है कि देश के हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह राष्ट्रगान और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति पूरा सम्मान दिखाये। देशवासियों को यह महसूस होना चाहिए कि यह मेरा देश है और मेरी मातृभूमि है। सिनेमाघरों में राष्ट्रगान बजाने की शुरुआत १९६० में हुई थी लेकिन बाद में सरकार ने इसे बंद करवा दिया था। ऐसी शिकायत मिली कि थियेटरों में राष्ट्रगान के समय लोग खड़े नहीं होते और राष्ट्रगान का अपमान होता है। पीठ ने केंद्र को निर्देश दिया कि इस आदेश को हफ्ते भर में लागू किया जाए और इस बारे में प्रमुख सचिवों के माध्यम से सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को सूचित किया जाए। पीठ ने कहा 'राष्ट्रगान के लिए जो नियम है उसके मूल में राष्ट्रीय पहचान, अखंडता और

(पिछले अंक का शेष)

देश चाहता है इन सवालों के जवाब

१. १९४६ में जम्मू-कश्मीर के लोकप्रिय महाराजा को हटाने के लिये 'नेशनल कांफ्रेंस' के तत्कालीन नेता शेख अब्दुल्ला ने 'कश्मीर छोड़ो' आंदोलन छेड़ा। आंदोलन में घाटी के कुछ लोग ही सक्रिय थे। वह देश की आजादी का समय था, ऐसे समय किसी भी रियासत में ऐसे आंदोलन का कोई औचित्य नहीं था। शेख अब्दुल्ला चाहते थे कि देश की आजादी की घोषणा से पूर्व महाराजा उन्हें सत्ता हस्तांतरित करें। उनके अनुसार मुस्लिम बहुल होने के कारण हिन्दू राजा को मुस्लिम बहुल कश्मीर पर राज्य करने का अधिकार नहीं है। महाराजा हरिसिंह ने शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार कर लिया।

यह प्रश्न आज तक अनुत्तरित है कि "सांप्रदायिक विद्वेष एवं व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा पर आधारित इस आंदोलन का समर्थन करने के लिए नेहरू जी ने जम्मू-कश्मीर आने की जिद क्यों की? जबकि महाराजा हरिसिंह ने भी उनसे न आने का व्यक्तिगत अनुरोध किया, व कांग्रेस पार्टी ने भी उन्हें ऐसा करने से मना किया? "नेहरू जी को कोहाला पुल पर रोक लिया गया एवं रियासत से वापिस भेज दिया गया। परिणामस्वरूप नेहरू जी हमेशा के लिए देशभक्त महाराजा हरिसिंह के विरोधी हो गये। वास्तव में १९३१ की गोलमेज कॉन्फ्रेंस में महाराजा हरिसिंह की देशभक्तिपूर्ण भूमिका के कारण अंग्रेज उनसे नाराज थे। माउण्टबेटन ने कश्मीर के विलय को उलझा कर उनसे व्यक्तिगत बदला लिया, जिसकी कीमत देश को आज तक चुकानी पड़ रही है।

२. महाराजा २६ अक्टूबर से पूर्व और संभवतः १५ अगस्त से पूर्व ही विलय के लिये तैयार थे, पर प्रश्न यह है कि नेहरू जी ने विलय के साथ आंतरिक शासन के लिये शेख अब्दुल्ला को सत्ता हस्तांतरण की जिद क्यों की, जबकि इसके लिये महाराजा कदापि तैयार नहीं थे?

३. इसी विषय पर समझाने के लिये गांधी जी भी जम्मू-कश्मीर महाराजा के पास क्यों गये?

४. विलय होने के पश्चात् नेहरू जी एवं उनकी सरकार ने जनमत संग्रह कराने की अवैधानिक व एकतरफा घोषणा क्यों की?

५. पाकिस्तान के कब्जे वाले क्षेत्रों को खाली कराये बिना हम संयुक्त राष्ट्र संघ में १ जनवरी, १९४८ को क्यों गये? भारत की सेना आगे पाकिस्तान के कब्जे वाले क्षेत्रों को वापिस लेना चाहती थी, परन्तु उसे अनुमति क्यों नहीं दी गई? हमने संयुक्त राष्ट्र संघ में जनमत संग्रह का आश्वासन क्यों दिया?

६. पी. ओ. के. में ५० हजार हिन्दू-सिखों के नरसंहार का जिम्मेदार कौन है?

७. पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पी.ओ.के.) के लाखों शरणार्थी ६३ वर्षों से विस्थापित कैपों में ही रहते हैं।

प्रयास पं० नेहरू और गोपालस्वामी आयंगर ने क्यों किया?

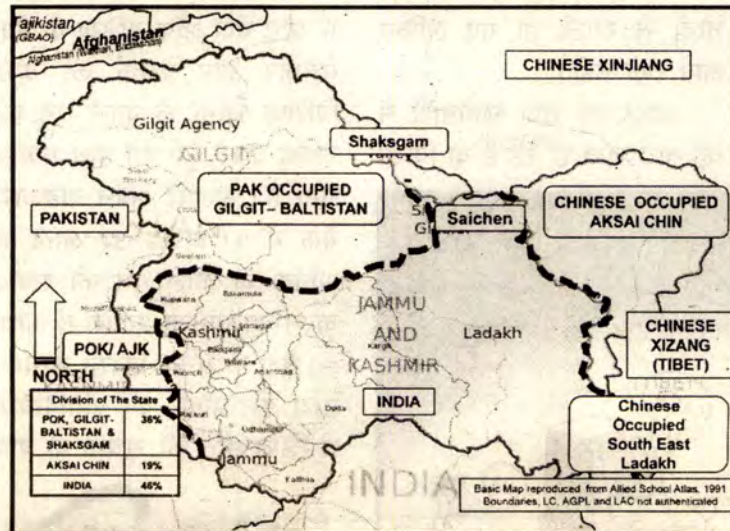
१२. पूरे लद्दाख एवं जम्मू में शेख अब्दुल्ला के विरोध के बाद भी

होगा। राज्यपाल, मुख्यमंत्री के स्थान पर जम्मू-कश्मीर में सदरे रियासत (राज्याध्यक्ष), वजीरे आलम (प्रधानमंत्री) कहलाये

बाद पुनः गिरफ्तार क्यों करना पड़ा? ऐसी क्या मजबूरी थी कि १९७५ में बिना चुनाव के कांग्रेस का पूर्ण बहुमत होते हुये भी शेख अब्दुल्ला को ही, मुख्यमंत्री बना दिया?

१६. सीमापार और यहां तक कि कश्मीर घाटी में भी चल रहे आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों, कश्मीर में आने वाले समय में पाकिस्तान की आतंकवाद फैलाने की योजनाओं, बढ़ते मदरसे, जमायते-इस्लामी की कट्टरवाद फैलाने की गुप्तचर रिपोर्टों की राजीव गांधी सरकार ने १९८४ से १९८६ तक अनदेखी क्यों की?

१७. जम्मू-कश्मीर में बार-बार



जम्मू-कश्मीर

इतिहास पुर्नलेखन, गलत फतवा और वहाबी जिहाद

सावधान! तेरा राष्ट्र कभी अवनत न हो।

प्रो० ए०पी० सारस्वत

इन ६३ वर्षों में पी. ओ. के. को वापिस लेने के लिये हमने क्या किया?

८. १९६५ एवं १९७१ में युद्ध जीतने के बाद भी अपने क्षेत्र वापिस लेने के स्थान पर १९७२ में शिमला समझौते में छम्ब का क्षेत्र भी हमने पाकिस्तान को क्यों दे दिया?

९. संविधान सभा में जम्मू-कश्मीर का प्रतिनिधित्व स्वाधीनता अधिनियम-१९४७, का उल्लंघन कर महाराजा हरिसिंह के स्थान पर शेख अब्दुल्ला की इच्छा के अनुसार नेशनल कांफ्रेंस के प्रतिनिधित्व देने के लिये संविधान सभा में प्रस्ताव क्यों लाया गया? इसी कारण से संविधान निर्माण के समय शेख अब्दुल्ला को अनुच्छेद-३७० के लिये दबाव बनाने का मौका मिला।

१०. स्वाधीनता अधिनियम के अनुसार आंतरिक प्रशासक शेख अब्दुल्ला को महाराजा एवं प्रधानमंत्री की देख-रेख में ही सरकार चलानी थी पर वे बार-बार महाराजा हरिसिंह और प्रधानमंत्री मेहरचंद महाजन का अपमान करते थे। उनको समझाने के स्थान पर अवैधानिक ढंग से पहले मेहरचंद महाजन और फिर महाराजा हरिसिंह को हटाने का कार्य केन्द्र सरकार ने क्यों किया?

११. भारत की संविधान सभा में प्रस्ताव लाकर जम्मू-कश्मीर नाम से जम्मू को हटाकर राज्य का नाम कश्मीर रखने का असफल

कांग्रेस ने केवल शेख को ही जम्मू-कश्मीर का नेता क्यों माना?

१३. १९५१ में संविधान सभा के चुनाव का नाटक हुआ। विपक्षी दलों के समस्त उम्मीदवारों के आवेदन रद्द कर दिये गये। ७५ में से ७३ सीटों पर नेशनल कांफ्रेंस के उम्मीदवार निर्विरोध चुने गये। कांग्रेस लोकतंत्र की इस हत्या पर चुप क्यों रही?

१४. कांग्रेस ने ऑटोनॉमी (स्वायत्तता) के नाम पर शेख अब्दुल्ला के सामने घुटने क्यों टेके? जिसके अंतर्गत १९५२ में पं० नेहरू ने निम्न बातों को स्वीकार किया-जम्मू-कश्मीर राज्य का अलग संविधान व अलग झंडा रहेगा। भारत के राष्ट्रीय ध्वज के समान ही जम्मू-कश्मीर के राज्य ध्वज को राज्य में सम्मान प्राप्त

जायेंगे। स्थायी निवासी प्रमाण पत्र की व्यवस्था, जिसके द्वारा शेष भारत का व्यक्ति जम्मू-कश्मीर में बस नहीं सकेगा, परन्तु जम्मू-कश्मीर का व्यक्ति देश में कहीं भी जाकर बस सकता है। सदरे रियासत का चुनाव जम्मू-कश्मीर की विधानसभा करेगी, राष्ट्रपति केन्द्र सरकार की सलाह पर सदरे रियासत अर्थात् राज्यपाल को नियुक्त नहीं कर सकेगा। भारत का चुनाव आयोग, प्रशासनिक सेवा अधिकरण (आई०ए०एस० एवं आई० पी० एस०), महालेखा नियंत्रक के अधिकार क्षेत्र में जम्मू-कश्मीर नहीं रहेगा।

१५. कांग्रेस ने १९५३ में शेख को गिरफ्तार क्यों किया? १९५८ में उसे रिहा किया, पर कुछ महीनों

चुनाव के नाम पर धोखाधड़ी होती रही, विशेषकर १९८३ एवं १९८७ के चुनाव के समय नेशनल कांफ्रेंस द्वारा की गई धांधलियों पर कांग्रेस चुप क्यों रही? (समाप्त)



बुलन्दशहर।

सावरकरवादी विचार धारा के लेखक, इन्द्र देव गुलाटी को, साहित्य मण्डल देवपुरा, श्री नाथ द्वारा

(राजस्थान)-३१३३०१ ने, उनके लेखों से प्रभावित होकर, जनवरी २०१७ में, अभिनन्दन करते हुए "साहित्य कुसुमाकर" की मानद उपाधि से, विभूषित करते हुए, उपाधि-पत्र प्रदान किया है।

दान/सहयोग द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर

माह चैत्र विक्रमी सम्वत् २०७४

1.	स्वामी दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली	900/-
2.	राष्ट्रीय कोहिनूर, एटा	2000/-
3.	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा/आर्य जगत, नई दिल्ली	2200/-
4.	वैदिक संसार, इन्दौर (आर्य समाज स्थापना दिवस पर दान)	501/-
5.	अखिल भारत हिन्दू महासभा, नई दिल्ली	501/-
6.	हिन्दू सभा वार्ता, नई दिल्ली	1350/-
7.	डी० ए० वी० इन्टर कॉलेज, बुलन्दशहर	501/-
8.	डी० ए० वी० डिग्री कॉलेज, बुलन्दशहर	501/-
	टोटल	8454/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संपादक, सावरकरवाद प्रचार सभा

मणिपुर में शुरु की भाजपा ने पहली पारी

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

मणिपुर के चुनावों की चर्चा यहीं से शुरु की जाए कि वहाँ भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन गई है। उसके एन बीरेन सिंह राज्य के नए मुख्यमंत्री बन गए हैं। पूर्वोत्तर में मणिपुर सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रान्त है। शताब्दियों पहले मणिपुर के मोरेह से शुरु होकर म्यांमार, थाईदेश से होते हुए कम्बोडिया में अंगकोर मंदिर की तीर्थ यात्रा पर साधु संत निकलते थे। यह शायद विश्व की सबसे लम्बी यात्रा थी। परिस्थितियाँ बदली, भूगोल बदले और वह यात्रा बन्द हुई। लेकिन मणिपुर विधान सभा को फतह करने में भारतीय जनता पार्टी को इतना समय नहीं लगा। भाजपा ने इम्फाल तक पहुँचने की यह यात्रा भी कुछ दशक पहले ही शुरु की थी। मणिपुर विधान सभा के लिए भाजपा की पूर्ववर्ती भारतीय जनसंघ ने १९७२ के विधान सभा चुनावों में पहली बार अपना एक प्रत्याशी चुनावों में उतारा था। १९७२ में ही मणिपुर को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला था। जनसंघ के प्रत्याशी की जमानत जब्त हुई और उसे मात्र १००४ वोट मिले। दो साल बाद १९७४ में राज्य की विधान सभा के लिए फिर चुनाव हुए। लेकिन इस बार भारतीय जनसंघ ने चुनाव में अपना कोई प्रत्याशी नहीं उतारा। १९७५ में उस समय की प्रधानमंत्री इन्दिरा गान्धी ने आपात स्थिति की घोषणा कर दी। उसके बाद जनसंघ का नई बनी जनता पार्टी में विलय हो गया। १९८४ में जनता पार्टी में असहज अनुभव करने के बाद जनसंघ के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी का गठन किया। १९८४ के विधान सभा चुनावों में भाजपा ने एक बार फिर इम्फाल की यात्रा शुरु की। उसने अपने ११ प्रत्याशी मैदान में उतारे, जीता तो कोई नहीं अलबत्ता ११ ने अपनी जमानत भी गँवाई। कुल मिला कर भाजपा को ६१७३ वोट मिले। १९९० के विधान सा चुनावों में पार्टी ने फिर ११ प्रत्याशी खड़े किए। जीता तो कोई नहीं लेकिन इस बार वोटों १८५४६ मिली और तीन प्रत्याशी जमानत बचाने में भी सफल रहे। मणिपुर में भाजपा ने पहली बार एक सीट १९९५ में जीती। उसने पहली बार बीस सीटों पर चुनाव लड़ा था। ३.३५ प्रतिशत मत प्राप्त किए। लेकिन जमानतें इस बार भी १४ प्रत्याशियों ने गँवाई। इससे

उत्साहित होकर उसने २००० के विधान सभा चुनावों में अपने ३६ प्रत्याशी खड़े कर दिए। पार्टी ने ११.२८ प्रतिशत प्राप्त कर ६ सीटें जीत लीं। २००२ के चुनावों में भाजपा ने ४६ प्रत्याशी उतार कर बड़ा हाथ मारना चाहा। लेकिन ६.४४ प्रतिशत लेकर उसके चार प्रत्याशी ही जीत पाए।

लेकिन २००२ के चुनावों के बाद शायद मणिपुर की घाटी में भाजपा का भाग्य धुँधला होता नजर आने लगा। २००७ के चुनावों में उसने १४ प्रत्याशी खड़े किए। कुल मिला कर १२५३६ मत प्राप्त किए और १३ प्रत्याशियों ने जमानत जब्त करवाई। जीता कोई नहीं। २०१२ के चुनाव में भाजपा ने १६ लोग खड़े कर दिए। १७ ने अपनी जमानत जब्त करवाई और २६६६३ वोट मिले। विजयश्री किसी के भाग्य में नहीं थी। लेकिन लगता है २०१४ के लोकसभा चुनावों में ही भाजपा के विकास और परिवर्तन की लहर इम्फाल की घाटियों में पहुँचनी शुरु हो गई। भाजपा ने इन चुनावों में १२ प्रतिशत मत प्राप्त किए। इसके कुछ समय बाद ही कांग्रेस के भीतर और उसके समर्थकों में बेचैनी बढ़नी शुरु हो गई क्योंकि कांग्रेस के मुख्यमंत्री इबोबी सिंह के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा था। मणिपुर विधान सभा अध्याक्ष ने तृणमूल कांग्रेस के तीन विधायकों को सदन की सदस्यता से फारिग कर दिया। एक को तो उच्च न्यायालय से राहत मिल गई लेकिन दो सदन से बाहर हो गई। नवम्बर २०१५ में विधान सभा की इन दोनों सीटों के लिए उपचुनाव हुए। भाजपा ने भी अपने प्रत्याशी उतारे। भाजपा के दोनों प्रत्याशी कांग्रेस को हराकर जीत गए।

उसके बाद भारतीय जनता पार्टी ने पूर्वोत्तर के केन्द्र असम में २०१६ के विधान सभा चुनावों में विधान सभा में स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया। भाजपा की यह पूर्वोत्तर में सबसे बड़ी दस्तक थी। कार्य विस्तार के लिए भाजपा ने पूर्वोत्तर के छोटे छोटे राजनैतिक दलों को मिला कर नार्थ ईस्ट डेमोक्रेटिक एलायंस (एनईडीए) बनाया ताकि सभी

राष्ट्रवादी शक्तियों को संगठित किया जा सके। असम में सरकार बनाने के बाद ही इस बात की चर्चा होने लगी थी २०१७ में मणिपुर में होने वाले विधान सभा चुनावों में भाजपा विजय पताका फहरा स्थिति है। पूर्वोत्तर में संगठन को मजबूत करने के लिए



भाजपा ने हिमाचल प्रदेश से अजय जम्बाल को संगठन मंत्री बना कर भेजा जो पहले भी अरुणाचल प्रदेश में लम्बे अरसे तक काम कर चुके हैं।

ऐसा नहीं कि कांग्रेस अपनी सत्ता पर आया संकट देख कर भी चुपचाप देखती रही। पन्द्रह साल से मणिपुर में कांग्रेस की सरकार चला रहे इबोबी सिंह ने अन्ततः वही पत्ता चला जिसके बलबूते कांग्रेस लम्बे अरसे से पूर्वोत्तर में अपना शासन चलाती रही है। उसने राज्य के नौ जिलों को तोड़ कर उनके सोलह जिले बना दिए। मणिपुर के नौ जिलों में से चार जिले तो घाटी में हैं और पाँच जिले पहाड़ में हैं। जनसंख्या के हिसाब से घाटी में रहने वाले लोगों को मैतेयी कहा जाता है और पहाड़ जनजातियों के लोग रहते हैं। ये जनजातियाँ भी कूकी और नागा के नाम से आपस में झगड़े भी चलते रहते हैं। राज्य की ज्यादा आबादी, घाटी में रहती है लेकिन घाटी का क्षेत्रफल राज्य का मात्र ३० प्रतिशत है। जमीन पहाड़ में है लेकिन वहाँ आबादी बहुत कम है। घाटी का मैतेयी पहाड़ पर जमीन नहीं खरीद सकता जबकि पहाड़ का जनजाति समाज घाटी में जमीन ले सकती है। इससे घाटी में जनसंख्या घनत्व बढ़ता जा रहा है। इन सब

कारणों से मैतेयी और जनजाति समाज के सम्बंधों में तनाव बना रहता है। कूकी और नागा का तनाव तो पुराना है ही। नागालैंड के उग्रवादी समूह कभी हिंसात्मक और कभी अहिंसात्मक तरीके से यह माँग भी करते रहते हैं मणिपुर के नागा बहुल जिलों को नागालैंड

में मिला दिया जाए। जब भी इनमें से किसी भी मसले पर नंगा और मणिपुर में तनाव बढ़ता है तो नंगा लोग मणिपुर पहुँचने का एक मात्र राजमार्ग रोक जगाते हैं जिससे घाटी में आम चीजों का मिलना दुर्लभ हो जाता है। चीजों का दाम आसमान छूने लगता है।

इबोबी सिंह मणिपुर के इन गली मुहल्लों को सबसे ज्यादा जानते हैं। वैसे भी कांग्रेस को पूर्वोत्तर में इस प्रकार के हथकंडों का उस्ताद माना जाता है। उन्होंने चुनाव से एन पहले दिसम्बर २०१६ में सात नए जिले बना दिए। पहाड़ के पाँचों जिलों ऊखरुल, सेनापति, तामेंगलॉंग, चन्देल, चूडचन्द्रपुर को तोड़ कर पाँच और जिलों अस्तित्व में आए। ध्यान रहे इन पाँच जिलों में से चूडचन्द्रपुर को छोड़ कर बाकी सभी जिले नागा बहुल हैं। चूडचन्द्रपुर कूकी बहुल जिला है। घाटी के दो जिलों इम्फाल पूर्व और विष्णुपुर को विभाजित कर दो नए जिले बना दिए। इबोबी सिंह जानते थे इस बिन बाद की बरसात से जो तूफान उठेगा वही कांग्रेस की नैया पार लगाएगा। नागाओं ने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार इन इलाकों में नंगा बहुलता को समाप्त करना चाहती है। मणिपुर को जाने वाले मार्ग की घेराबन्दी शुरु हो गई। इसका इबोबी सिंह को भी पता था। वे जानते थे कि इस घेराबन्दी

से घाटी की मैतेयी जनसंख्या का जीवन संकटमय हो जाएगा। लेकिन वे यह भी जानते थे कि नागालैंड में भारतीय जनता पार्टी नंगा पीपुल्स रंट के साथ है। अतः इम्फाल घाटी के लोग इस घेराबन्दी के लिए अन्ततः भाजपा को जिम्मेदार मान लेंगे। जिसके कारण वे उससे छिटक सकते हैं। १४ दिसम्बर को जब पहाड़ में इबोबी सिंह नए बनाए जिले तेंगनौपाल का उद्घाटन करने पहुँचे तो उनके काफिले पर घात लगा कर हमला किया गया, जिसमें तीन कमांडो मारे गए। मणिपुर में आम चर्चा होने लगी कि यह हमला केवल सहानुभूति अर्जित करने के लिए करवाया गया है। घाटी में कुल मिला कर ४१ सीटें हैं। पहाड़ों पर केवल १६ घाटी के मैतेयी यदि पहाड़ों के कूकी-नागा के खिलाफ डट जाएँगे तो इन ४१ सीटों पर ६ ठुवीकरण हो सकेगा। मणिपुर को जा रहे राजमार्गों की घेराबन्दी से यकीनन भाजपा घिर जाएगी। न खाते बनेगा और न ही निगलते। राज्य में जो वैमनस्यपूर्ण बढ़ेगा, उससे कांग्रेस को कुछ लेना देना नहीं था।

लेकिन भाजपा ने सबसे पहले तो इबोबी सिंह की रक्षा पंक्ति तोड़ डाली। कांग्रेस के क्षेत्रीय क्षत्रप कांग्रेस से छिटक कर भाजपा में आ गए। मैतेयी मतदाता को गोलबन्द करने के लिए भाजपा मणिपुर के महाराजा निंगथो लेईशाम्बा संजोबा को मंच पर ले आई। मणिपुर के महाराजा को आजतक कांग्रेस ने तिरस्कृत ही किया था। महाराजा को मंच पर सम्मान देकर भाजपा ने मैतेयी स्वाभिमान को छूने का प्रयत्न किया। यहाँ तक रोज रोज मणिपुर को जाते राजमार्ग पर की जाती घेराबन्दी को तोड़ने का प्रश्न था, आम आदमी को लगा, इस पर भाजपा तो काबू पा सकती है। कांग्रेस के बस का यह काम नहीं है क्योंकि कांग्रेस इसका राजनीतिकरण करती है। इस पृष्ठभूमि में भाजपा को साठ सदस्यीय विधान सभा में २१ और कांग्रेस को २८ सीटें प्राप्त हुई। चार-चार सीटे नेशनल पीपुल्स पार्टी और

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री अरूण जेटली जी,

माननीय रक्षा मंत्री, भारत सरकार

साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

**विषय : दक्षिण सागर में चीन द्वारा बन रहे मिसाइल भंडार
गृह पर सतर्क होने का सुझाव।**

महोदय,

समाचारों से यह पता चला है कि चीन ने बड़ी गोपनीयता और तीव्रगति से दक्षिण चीन सागर में कुछ कृत्रिम द्वीप बना लिए हैं और उन पर कई दर्जन भवन बनाने में जुटा हुआ है। इनमें प्रक्षेपास्त्र जमा होंगे, जिनका इस्तेमाल चीन हिन्दुस्थान सहित अन्य अनेक देशों के विरुद्ध कर सकेगा। द्वीपों पर हवाई पट्टियाँ भी बना ली गई हैं।

प्रश्न उठते हैं कि हिन्दुस्थान का इस नई मुसीबत के प्रति क्या रुख है और केन्द्रीय सरकार कितनी शीघ्रता से इस मुसीबत से निपटने में सफल होगी? हमारे देश की क्या रणनीति है और कैसे चीन की इस नई आफत से निपटा जाएगा?

विश्वास है कि देश की केन्द्रीय सरकार रक्षात्मक कार्यकलापों से आश्वस्त करेगी। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

श्री प्रकाश जावड़ेकर जी,

माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार

शास्त्री भवन, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

विषय : जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में सुधार लाने की मांग।

महोदय,

सर्वविदित है कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय वाममार्गियों का अड्डा बन गया है, जिनका लक्ष्य ऋण लेओ और घी पीओ है। ऐसे वातावरण को बदलने का कदाचित एक ही तरीका है कि विश्वविद्यालय के संकाय धीरे-धीरे घटाए जाएँ और अनेक पाठ्यक्रम रद्द कर दिए जाएँ, साथ-साथ धन का आबंटन घटा दिया जाए। लगभग ऐसी ही स्थिति जामिया मिलिया और अलीगढ़ विश्वविद्यालय की है। वहाँ भी सरकार को ऐसे ही कदम उठाने चाहिए, क्योंकि ये नासूर बन गए हैं और इनका उपचार शल्यक्रिया ही है। विश्वास है कि इस दिशा में रणनीति बनाई जाएगी और उसका कार्यान्वयन तेजी से किया जाएगा। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 9 का मणिपुर में शुरु की भाजपा.....

नागा पीपुल्स रंट को मिली। एक एक सीट लोक जन शक्ति पार्टी और तृणमूल कांग्रेस को मिली। एक सीट निर्दलीय के खाते में गई। यहाँ तक प्राप्त मतों का

सवाल है, भारतीय जनता पार्टी को ३६.३ और कांग्रेस को ३४.६ प्रतिशत मत प्राप्त हुए। २०१२ के विधान सभा चुनावों में कांग्रेस को ४२.४२ और भाजपा को केवल २.१२ प्रतिशत मत मिले थे। कांग्रेस को घाटी की चालीस सीटों में से १६ सीटें मिलीं और भाजपा को १६ सीटें। पहाड़ की बीस सीटों में से कांग्रेस को ६ और भाजपा को ५ सीटें मिली। साठ में से शेष बची ग्यारह सीटें स्थानीय राजनैतिक दलों को मिली। कांग्रेस के प्रति जन आक्रोश कितना था इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कांग्रेस को इक्कीस का जादुई आँकड़ा छूने के लिए केवल तीन विधायकों की जरूरत थी लेकिन एक भी विधायक उसे समर्थन देने के लिए आगे नहीं आया। इसके विपरीत भाजपा को सरकार बनाने के लिए दस दूसरे विधायकों की जरूरत थी और प्रदेश के अन्य सभी दस विधायक भाजपा के साथ चलने को राजी हो गए। लेकिन इस सबके बीच भाजपा के दो प्रत्याशियों की पराजय सभी को आश्चर्य चकित कर गई। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष चोयबा सिंह और प्रदेश के उपाध्यक्ष प्रेमानन्द शर्मा। लेकिन सबसे बड़ा झटका लगा इरोम शर्मिला को। वह राज्य के मुख्यमंत्री इबोबी सिंह के खिलाफ खड़ी थी और उसे केवल ६० वोट मिले। उसकी पार्टी प्रजा का भी कोई प्रत्याशी जीत नहीं सका। शर्मिला पिछले १६ साल से राज्य में से सेना को विशेषाधिकार देने सम्बंधी कानून (AFSPA) हटाने के लिए भूख हड़ताल पर बैठी थी। कुछ मास पहले ही उसने अपना व्रत छोड़ा था और कांग्रेसी मुख्यमंत्री के खिलाफ किस्मत आजमाने का फैसला लिया था। उसे मिले ६० वोटों से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि राज्य में यह मुद्दा था ही नहीं। वैसे भी मणिपुर में चर्चा थी कि कुछ उग्रवादी समूह शर्मिला को जबरदस्ती भूख हड़ताल पर बिठाए हुए हैं। शर्मिला ने आगे से राजनीति से तौबा कर ली है।

शेष पृष्ठ 7 का आखिर कब बदलेगा देश.....

होगा कि देश के साथ गद्दारी करने वाले किसी भी कीमत पर बख्शे नहीं जाएँगे और यह काम केवल कागजों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। बैंकों के उन अधिकारियों को सजा मिलनी चाहिए जिनकी वजह से बैंकों में पर्याप्त मात्रा में नई मुद्रा होने के बावजूद देश में आम आदमी के लिए नई मुद्राओं की कमी एक महीना बीत जाने के बाद आज भी बनी हुई है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था में से काला धन बैंकों में काफी हद तक आ चुका है। तो अब सरकार को चाहिए कि जिन लोगों ने कुछ पैसों के लालच में अमानत में खयानत की है उन्हें ऐसे सजा दी जाए कि 'सब चलता है' वाली भारतीय मानसिकता पर प्रहार हो। आम आदमी तो देश के बदलने का इंतजार कर रहा है लेकिन 'खास' लोगों को समझा दिया जाना चाहिए कि देश बदल चुका है। सरकारी पद पर बैठे अधिकारी को यह बात समझ में आ जानी चाहिए कि देश के कानून केवल हमारे संविधान में लिखे कुछ शब्द नहीं हैं जिनका उपयोग वे अपनी मनमर्जी से करते थे बल्कि अब वे उस कानून के शिकंजे में फँस भी सकते हैं सूद के चक्कर में मूल भी चला जाएगा।

शोक समाचार

गंगा प्रसाद वर्मा का निधन

बुलन्दशहर शिव चरन इन्टर कॉलेज बुलन्दशहर के पूर्व अध्यापक गंगा प्रसाद वर्मा का हृदय गति रुकने से २१ मार्च प्रातः ४ बजे निधन हो गया। वे बुलन्दशहर का इतिहास नाम की पुस्तक लिख रहे थे जो इसी वर्ष प्रकाशित होनी थी। इनका जन्म ८ फरवरी १९४० को हुआ था। अपनी जन्म तिथि पर हिन्दू महासभा नई दिल्ली कार्यालय को भेजने के लिए कुछ रुपए प्रति वर्ष दिया करते थे। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ती व सद्गति प्रदान करे।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

वैश्विक परमाणु दिग्गजों का.....

अमेरिकी रिएक्टरों को खरीदने की इच्छा के साथ नैतिक आधार पर उच्च स्थिति बनाए रख सकता है लेकिन चूंकि कंपनियां खुद ही मुश्किलों में हैं, ऐसे में कोई समझौता किया नहीं जा सकता। भारत एक बार फिर बिना परीक्षण वाली प्रौद्योगिकियों के जबरन आयातों से मुक्त परमाणु पथ पर बढ़ने की उम्मीद कर सकता है। परमाणु क्षेत्र की दिग्गज अमेरिकी कंपनी वेस्टिंगहाउस इलेक्ट्रिक कंपनी, एलसीसी ने एक सप्ताह पहले दिवालियापन के लिए अर्जी दायर की। पिछले साल फ्रांसीसी कंपनी अरेवा भी इसी प्रक्रिया से गुजरी थी। दोनों ही कंपनियों ने भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु संधि के बाद भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों को लगाने में भारी रुचि दिखाई थी। दोनों ही कंपनियां भारत से अरबों डॉलर का परमाणु कारोबार हासिल करना चाहती थीं, जब भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु संधि से जुड़ी वातावरण चल रही थी, तब भारतीय परमाणु प्रतिष्ठान का एक छोटा लेकिन प्रभावशाली समूह विभिन्न प्रकार के रिएक्टरों का आयात करने पर बेहद असहज था। इस समूह का मानना था कि जब भारत ने संपीड़ित भारी जल रिएक्टरों को बनाने में महारत हासिल कर ली है, तो ऐसे में प्रयास इस प्रौद्योगिकी के प्रसार का होना चाहिए। जबकि साथ में भारत के अत्याधुनिक प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और आधुनिक भारी जल रिएक्टर को बढ़ावा देने का काम किया जा सकता है। इंजीनियर से संप्रग सरकार के प्रभावशाली नेता बने जयराम रमेश उन शुरूआती विरोधियों में थे, जिन्होंने इतनी सारी किस्म के रिएक्टरों को आयात करने के खिलाफ आवाज उठाई थी। विभिन्न प्रौद्योगिकियों में महारत हासिल करना एक जटिल काम है और वरिष्ठ वैज्ञानिकों के बीच इस बात को लेकर काफी घबराहट थी कि यदि भारत-अमेरिका सैन्य परमाणु संधि को लागू किया जाना है तो नए रिएक्टरों की कम से कम तीन किस्मों के संचालन में महारत हासिल करनी होगी। इस औचक बदलाव ने भारत को वापस वर्ष 2008 की उस स्थिति में ला दिया है, जिसके बाद अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने भारत के परमाणु उर्जा क्षेत्र से हाथ मिलाने का फैसला किया था। उस समय भारत के पास अपना संपीड़ित भारी जल रिएक्टर और रूसी प्रौद्योगिकी थी लेकिन तब भारत के पास यूरेनियम ईंधन की सतत आपूर्ति नहीं थी। भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रसार के लिए यूरेनियम का आयात एकमात्र विकल्प है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि भारत को परमाणु संपन्न राष्ट्र बनाया जाये। इस कार्य के लिये भारतीय वैज्ञानिकों को पूर्ण सुविधाये दी जाये।

शेष पृष्ठ 6 का

अमेरिकी कांग्रेस के रिपब्लिकन सिनेटरों.....

आज जलते बलूचिस्तान में भी 96७१ की पुनरावृत्ति हो सकती है जब बांग्लादेश पाकिस्तान से अलग हो गया था? इस प्रश्न पर भी अटकलें लगाई जा रही हैं। वैसे अमेरिका ऊपरी तौर से पाकिस्तान की एकता के समर्थन में आगे है पर हाल के 'यू.एस. आर्म्ड फोर्स जर्नल' में एक लेख पाकिस्तानी मानचित्र के साथ प्रकाशित किया गया है जिसमें बलूचिस्तान को 'स्वतंत्र' देश दिखाया गया है। क्या यह मात्र संयोग है या उस क्षेत्र के लिए अमेरिकी भूराजनीति का नया रणनीतिक खेल है—कहा नहीं जा सकता। बलूचियों ने 'पंजाबी मुसलमानों' और उर्दूभाषियों को दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान से तुरन्त जाने का अल्टीमेटम दिया है। यह राष्ट्रवादियों की 'स्वतंत्रता की अगली लड़ाई' का पहला चरण कहा गया है। बलूची ग्वादर बन्दरगाह के विकास में चीनी सहयोग के विरुद्ध हैं। हाल में उन्होंने वहाँ के तीन चीनी इंजीनियरों की हत्या कर दी थी। पाकिस्तानी सेना ने बलूचिस्तान में फास्फोरस बम और रासायनिक हथियारों का प्रयोग किया है, ऐसा आरोप लगाया गया है। पाकिस्तानी प्रशासन जनता से पूरी तरह से कट चुका है। नवम्बर सन् 200६ में यूरोप बसे एक पाकिस्तानी लेखक वह ब्रिटिश चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट सेयद जमालुद्दीन ने एक ग्रंथ लिखा था जिसका शीर्षक था—'डिवाइडर पाकिस्तान टु एलीमिनेट टेरेरिज्म' और यह सुझाव दिया गया था पाकिस्तान को छह अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित कर दिया जाए। इसमें कहा गया था कि आतंकवाद के उन्मूलन के लिए बलूचिस्तान को स्वतंत्र करना अनिवार्य है।

कुछ भी हो पाकिस्तान के सम्भावित विघटन और बलूचिस्तान को पृथक स्वतंत्र देश बनाने की पश्चिमी मीडिया में आज फिर खुलकर चर्चा हो रही है।

शेष पृष्ठ 4 का

डायबिटीज को प्राकृतिक तरीकों.....

डीप फाई, ऑयली भोजन, जंक फूड, आर्टिफिशियल फ्लेवर्ड फूड व मैदा से बनी चीजों से भी परहेज करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मधुमेह के रोगी को शराब, धूमपान व कार्बोनेटेड पेय पदार्थ भी न पीने की सलाह दी जाती है। मधुमेह रोगी को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि उसके डाइट में अनाज कम और सब्जियाँ ज्यादा हो। साथ ही आपके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले दाल व चावल भी अनपॉलिश हो। इसके अतिरिक्त अपने भोजन में सोयाबीन, सेम, शलजम, खीरा, ककड़ी, लहसुन, लौकी, करेला, पालक, मेथी, बथुआ, चौलाई, आंवला, जामुन आदि को अवश्य शामिल करें। मधुमेह पीड़ित व्यक्ति को समय-समय पर अपनी रक्त शर्करा की जाँच नियमित अंतराल पर कराते रहना चाहिए, ताकि किसी प्रकार की मधुमेह जन्य विकृति से रोगी अपना बचाव कर सके। अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने के लिए आप अपनी दिनचर्या कुछ फिजिकल एक्टिविटी जैसे योग, क्रियाएँ, प्राणायाम या पार्क में टहलना आदि को अवश्य शामिल करें। आप चाहें तो सुबह के समय सन बाथ भी ले सकते हैं। यह आपके मेटाबॉलिज्म को रेगुलेट करने में काफी मदद करेगा।

शेष पृष्ठ 1 का

देश में एक समान नागरिक....

मानव अधिकार भी देने को तैयार नहीं हैं। तलाक देने का अधिकार महिलाओं को भी उतना ही मिले जितना पुरुषों को है, किन्तु, ये उसके लिए तैयार नहीं हैं। ऊपर से, निकाह हलाला जैसी बर्बर अमानवीय परम्परा को भी उचित ठहराकर इन लोगों ने महिलाओं के प्रति अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करा दिया है। इसलिए, मुस्लिम महिलाओं को मानवाधिकार दिलाने हेतु अब केंद्र सरकार को इस संबंध में आवश्यक कानून अविलम्ब बनाना चाहिए। बोर्ड के राम मन्दिर संबंधी बयान पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा कि इस मामले में भी बोर्ड ने अपनी हठ-धर्मिता को ही दोहराया है। वे राम जन्म भूमि के मामले में तो न्यायालय का निर्णय चाहते हैं किन्तु, तीन तलाक में न्यायालय का हस्तक्षेप नहीं। उनकी इस दोहरी मानसिकता से ही स्पष्ट हो जाता है कि वे न्यायपालिका का कितना सम्मान करते हैं। इसलिए उनके बहकावे में आने की बजाए केंद्र सरकार को आगे बढ़कर तीन तलाक, हलाला व बहु विवाह जैसी बर्बर परम्पराओं को समाप्त करने हेतु अतिशीघ्र कानून लाना चाहिए। देश में एक समान नागरिक कानून शीघ्र बने। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा कि मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड अब दिवालिया हो चुका है, जिसका मुस्लिम समाज में न कोई जनाधार है और न ही यह सम्पूर्ण मुस्लिम समाज की भावनाओं का प्रतिनिधित्व भी करता है। बल्कि, यह केवल उनमें कट्टरता को बढ़ाकर अपनी उपयोगिता सिद्ध करना चाहता है। अतः इसकी पूर्ण रूपेण उपेक्षा कर देनी चाहिए, तभी, मुस्लिम समाज से सम्बंधित सभी समस्याओं का समाधान हो पाएगा।

दिनांक 03 अप्रैल से 09 मई 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
मोहनी एकादशी	06 मई	शनिवार
रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती	07 मई	रविवार
गोपाल कृष्ण गोखले जयंती	09 मई	मंगलवार
नरसिंह जयंती	09 मई	मंगलवार

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहाँ निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

यह भी सच है

धर्माधारित आतंकवाद एक सच्चाई

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अनेक अवसरों पर आतंकवादियों के समर्थन में बुद्धिजीवी व कट्टर मुसलमानों के अतिरिक्त ढोंगी धर्मनिरपेक्षता वादी और जयचंदी हिन्दुओं की सहभागिता होने से आतंक की जड़ पर प्रहार नहीं हो पाता। इन विपरीत परिस्थितियों के कारण हमारा समाज व राष्ट्र जिहादियों के अनेक षडयंत्रों से घिरता जा रहा है जिससे अनेक मोर्चों पर हमारे उदासीन रहने के कारण आतंकियों का दुःसाहस भी बढ़ रहा है। आतंकवाद को मिटाने वालों व आतंकवादियों की इस्लामी पहचान को ढाल बना कर बचाने वालों में जो समाजिक विभाजन हो गया है वह एक खतरनाक भविष्य का संकेत है। प्रायः हमें मंदिरों में जो धर्म की शिक्षा दी जाती है उससे अच्छे-बुरे व पाप-पुण्य का ज्ञान अवश्य मिलता है परंतु इससे शत्रु की पहचान का भाव नहीं समझा जा सकता। जबकि मंदिरों मस्जिदों आदि में धर्म का अर्थ कट्टरता से जोड़ा जाता है, उन्हें कैसे सुरक्षित रहना है बताया जाता है, काफिर व अविश्वासियों (गैर मुस्लिमों) से कैसे जिहाद करना है सिखाया जाता है। अनेक प्रकार से उन्हें दारुल इस्लाम यानि कि विश्व का इस्लामीकरण करने और उस पर मरने के लिए फिदायीन (Suicide bomb) तक बनाया जाता है।

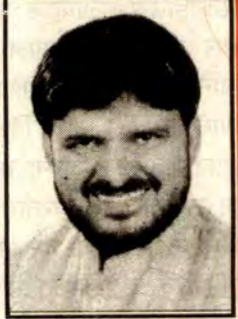
सन 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि तालिबान व अलकायदा आदि जिहादी संगठन पाक व अफगानिस्तान की सीमाओं पर अनेक छोटे छोटे बच्चों को धन देकर व जन्नत का वास्ता देकर फिदायीन बनाते हैं। तालिबान ने फिदायीन-ए-इस्लाम नाम से वजीरिस्तान में तीन ऐसे प्रशिक्षण शिविर तैयार किये हुए हैं जिसमें हजारों की संख्या में कम आयु (90 से 93 वर्ष) के मासूम मुस्लिम बच्चे प्रशिक्षण पा रहे हैं। अफगानिस्तान की तत्कालीन सरकार के अनुसार इन बच्चों को चौदह हजार से साठ हजार डॉलर में खरीदा जाता है और इनके माँ-बाप को समझाया जाता है कि धन के अतिरिक्त आपका बेटा इस्लाम के लिये शहीद होकर सीधे जन्नत पहुँचेगा। पाकिस्तान के कुनार व नुरिस्तान आदि क्षेत्रों में जो बच्चे आत्मघाती बनने को तैयार हो जाते हैं उन्हें छोड़े पर बैठा कर दूल्हे की तरह सजा कर पूरे गाँव में घुमाया जाता है और गाँव वाले कुछ तालिबानियों के भय से व कुछ समर्थक आदि बच्चों के माँ-बाप को मुबारकबाद देने भी आते हैं। समाचारों से स्पष्ट है कि पाकिस्तान की सरकार भी इसको स्वीकार करती है। इसी प्रकार इस्लामिक स्टेट भी ऐसे क्षेत्रों में मुस्लिम बच्चों को इस्लाम के नाम पर भविष्य के जिहादी तैयार करने में जुट गया है। हमारे देश की सीमाओं पर अवैध मंदिरों व मस्जिदों अबाध गति से बढ़ते जा रहे हैं। इनमें घुसपैठ करके दुर्दान्त आतंकियों को शरण मिल जाती है। उनके द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों के मुस्लिम बच्चे जिहाद की शिक्षा व अन्य प्रशिक्षण पाते हैं। अक्टूबर 2014 के एक समाचार पत्र में छपे एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के लेख के अनुसार केवल बंगलादेश से लगी हमारी सीमाओं पर ही लगभग 9600 मंदिरों व 2000 मस्जिदें हैं और इनमें अरबी इस्लाम की शिक्षा दी जाती है जो उन्हें भारत की मुख्य धारा से जुड़ने की नहीं देती। कट्टरपंथी धार्मिक शिक्षाओं से छोटे छोटे बच्चों के मन-मस्तिष्क पर इतना कुप्रभाव पड़ता है कि वे अपने परिजनों को भी काफिर समझने लगते हैं। इस प्रकार जिहाद के लिए आतंकियों की पौध हमारे देश में भी तैयार की जाती आ रही है। यही नहीं देश के अनेक नगरों व गावों में अवैध मस्जिद व मंदिरों भी जिहादी षडयंत्रों का अप्रत्यक्ष सहयोग करते हैं। अधिकांश वैश्विक समाज व हिन्दू समाज मानवता के विरुद्ध हो रहे ऐसे भयानक षडयंत्रों को समझ ही नहीं पाते और इसी भुलावे में उसको अपने मित्र व शत्रु का भी आभास नहीं होता। वह अपने परिवार व समाज में तो छोटी छोटी बातों में बाहें तान लेते हैं पर अंदर ही अंदर होने वाली बड़ी हानि वे समझ नहीं पाते। वास्तव में ऐसी धार्मिक कट्टरता के विरोध से ही साम्प्रदायिकता को नष्ट किया जा सकता है जिससे सामाजिक सौहार्द बनेगा और मजहबी आतंकवाद पर विजय मिल सकेगी। प्रचार के इस युग में मानवता की रक्षा के लिए समाचार पत्रों व चैनलों को भी ऐसे भयानक षडयंत्रों का खुलासा करके समाज की सुरक्षा के लिए उसको सतर्क व सावधान करते रहना चाहिये।

अतः आज बड़ा प्रश्न है कि सभी राष्ट्रवादियों व मानवतावादियों को धर्म व देश के संकट को समझ कर उसकी रक्षा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। ऐसे में अपने अस्तित्व व स्वाभिमान के लिए संघर्ष से बचने का मार्ग आत्मघाती होगा। यह अत्यंत चिंता का विषय है कि जब कोई अपने धार्मिक ग्रंथों व दर्शन के कारण हमको काफिर मानेगा तो हम उस कट्टरपंथी समुदाय के निशाने से कब तक बच पाएंगे? उदारता, सहिष्णुता संवेदनशीलता व मानवता का अभाव जिसमें होगा और जो विश्व के इस्लामीकरण के लिए जिहाद की शिक्षाओं से बाहर आकर कोई मध्यम मार्ग नहीं बनाएगा तो फिर मानवता के उच्च मापदंड कैसे सुरक्षित रह पायेंगे? आज हमारे देश सहित विश्व के अनेक देशों की यही पीड़ा है और अधिकांश मानवतावादी इस पीड़ा को समझ चुके हैं फिर भी इस अन्यायकारी व अत्याचारी जिहादी जनून से मानवता की रक्षा के उपाय अभी अपर्याप्त हैं। इसलिये विश्व के नीतिनियंताओं को वैश्विक शान्ति व मानवता की रक्षार्थ प्रभावकारी उपाय करने ही होंगे अन्यथा इन मानवीय आपदाओं से पृथ्वी के विनाश को नियंत्रित करना संभव न होगा?

विनोद कुमार सर्वोदय

कबिरा खड़ा बजार में

सरकार के लिए है शर्मनाक



श्रीनगर उपचुनाव में महज 7 प्रतिशत मतदान और हिंसा में आठ लोगों की मौत दुखद घटना है, और लोकतंत्र के लिहाज से बेहद शर्मनाक भी। श्रीनगर की इस चुनावी असफलता ने केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की मुफ्ती सरकार को आईना दिखाया है, बशर्ते वे इसे देखने की जहमत उठाएं। लोकतंत्र की रक्षा के लिए बड़ी-बड़ी बातें करना और बात है और उस वादे को निभाने के लिए ईमानदारी से प्रतिबद्धता दिखाना दूसरी बात। चुनावों में किसी भी तरह जीत हासिल करना मोदी-शाह की जोड़ी की पहली प्राथमिकता बन चुकी है और जहां जीत हासिल न हो, वहां किसी भी तरह से सरकार बना लेना, उनका पहला लक्ष्य दिखता है। बेशक देश का बड़ा हिस्सा भाजपामय हो चुका है और इसलिए चाहे नगरीय निकाय चुनाव हों, विधानसभा चुनाव हों या किसी सीट का उपचुनाव ही क्यों न हो, भाजपा का अंदाज ऐसा रहता है, मानो चक्रवर्ती सम्राट बनने की तैयारी है। जम्मू-कश्मीर चुनावों के वक्त जिस बाप-बेटी की जोड़ी को खूब कोसा गया था, चुनाव बाद उसी के साथ गठबंधन कर सरकार बनाने में भाजपा को कोई खामी नजर नहीं आई। दूसरी ओर पीडीपी ने भी भाजपा को बनिहाल पार न करने देने का बीड़ा उठाया था, लेकिन सरकार बनाने के लिए उसे भाजपा का साथ लेने में कोई झिझक नहीं हुई। इस अवसरवादी गठबंधन से अगर जम्मू-कश्मीर में स्थिरता आती, बातों के अलावा विकास जमीन पर दिखाई देता, लोग वाकई शिक्षा, रोजगार की ओर से निश्चित रहते तो फिर सारी शिकायतें एक ओर हो जातीं। किंतु अभी सूरत ऐसी बिल्कुल नहीं है। कश्मीर लगातार सुलग रहा है, लेकिन इस आग को बुझाने की जगह छिपाने की कोशिशें हो रही हैं। इसलिए पिछले साल भर से वहां स्थिति गंभीर होती जा रही है। 6 अप्रैल को श्रीनगर के उपचुनाव में जिस तरह की हिंसा हुई, उसने 60 का वह दौर याद दिला दिया, जिसमें उग्रवाद के साए में चुनाव हुए थे, इस उम्मीद के साथ कि लोकतंत्र मजबूत होगा तो हालात बदलेंगे। बुरहान वानी की मौत के बाद जो हिंसक तनाव फैला और उसे संभालने के लिए सुरक्षा एजेंसियों ने जो कार्रवाई की, उससे खिन्न होकर श्रीनगर से तब पीडीपी के सांसद हमीद कारा ने इस्तीफा दे दिया था और बाद में पीडीपी छोड़ दी थी। अब वे कांग्रेस में हैं। श्रीनगर की इस सीट के लिए नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष फारुख अब्दुल्ला और पीडीपी के नाजिर खान के अलावा 7 और उम्मीदवार थे। गृह मंत्रालय के मुताबिक उसने चुनाव आयोग को सूचित कर दिया था कि अभी श्रीनगर और अनंतनाग में चुनाव के लिए स्थितियां ठीक नहीं हैं। लेकिन निर्वाचन आयोग ने इस सलाह को दरकिनारा कर चुनाव कराए, ऐसा गृह मंत्रालय का कहना है। जबकि निर्वाचन आयोग का कहना है कि वह सरकार से कोई कानून मशविरा लेने के लिए बाध्य नहीं है। 30 हजार अर्द्धसैनिक बलों के बावजूद घाटी में 960 हिंसक वारदातें यानी पत्थर फेंकने की वारदातें हुईं, 920 पोलिंग बूथ में तोड़ फोड़ की गई, 28 ईवीएम लूटी गई, दो स्कूल जलाए गए, आठ लोग मारे गए और 950 घायल हुए। श्रीनगर उपचुनाव की इस हिंसक परिणति के बाद अब अनंतनाग सीट का उपचुनाव 25 मई तक टाल दिया गया है। यह एक फौरी कदम है। अब केंद्र और राज्य सरकार को इस स्थिति पर गंभीरता से विचार कर ऐसे हालात बनाने होंगे कि लोग चुनाव का विरोध न करें, बल्कि इस प्रक्रिया में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी करें। अगर ऐसा नहीं होता है तो कश्मीर की घाटियों में जैसे यू टर्न बने हुए हैं, यह राज्य वापस उग्रवाद के उसी दौर में पहुंच सकता है, जहां से इसे बड़ी मुश्किल से निकाला गया था।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

